कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

Qku : +91(11) 23381428
QDl : +91(11) 23387887
lnL;rk : +91(11) 23005798

ई-मेल
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

अर्जुन मुंडा तीसरी बार बने झारखंड के मुख्यमंत्री

झारखण्ड में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अर्जुन मुंडा ने 11 सितम्बर को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनकी अगुवाई में भाजपा, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और ऑल झारखण्ड स्टूडेंटस यूनियन (आजसू) की गठबंधन सरकार बनी।

सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून हटाना आत्महत्या के समान..... 6
राष्ट्रीय मीडिया कार्यशाला सम्पन्न..... 7
जनता से अटूट सम्पर्क बने रहना चाहिए..... 8

मोर्चा / प्रकोष्ठ
भाजयुमो : राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक..... 11
प्रकोष्ठों की प्रथम बैठक..... 20

लेख
बिहार विधानसभा चुनाव : जातिवाद बनाम विकास की लड़ाई
-संजीव कुमार सिन्हा..... 12

साक्षात्कार
स्मृति ईरानी, भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष 18

अन्य
उपचुनाव : भाजपा ने कांग्रेस को दी करारी शिकस्त..... 15
पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर विशेष..... 21
भाजपा विशाल किसान जन पंचायत..... 26

राज्यों से
xqtjkr@dukVd उपचुनावों में भाजपा की विजय..... 15
fnYyh % प्रदेश कार्यसमिति बैठक..... 24
भाजपा विशाल किसान जन पंचायत..... 26
i- cxky % बसीरहाट और बारासात में साम्प्रदायिक हिंसा..... 27
e/;izn'k % झाबुआ में मंडल स्तरीय कार्यकर्ता बैठक..... 28
jkt LFkku % ''मरू कमल दर्पण'' का लोकार्पण..... 29
mÙkj izn'k % भाजयुमो छात्र-युवा सम्मेलन..... 30

संपादक के नाम पत्र...

देश का छात्र–युवा राष्ट्रवादी विचारधारा के साथ

कमल संदेश (16–30 सितम्बर, 2010) पढ़ा। यह पाक्षिक पत्रिका राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। संपादकीय में ठीक ही टिप्पणी की गयी है कि दिल्ली विश्वविद्यालय और राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में छात्रों ने राष्ट्रवादी छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के प्रत्याशियों को जिताकर कांग्रेस को आइना दिखाया है और राहुल गांधी के 'जादू' का भ्रम तोड़ दिया है। ये परिणाम स्पष्ट संकेत देते हैं कि देश के छात्र–युवाओं को अधिक समय तक धोखे में नहीं रखा जा सकता। हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री शांता कुमार ने अपने लेख में चिंता प्रकट की है कि जिस देश में दुनिया में सबसे अधिक भूखे लोग रहते हैं उस देश की सरकार के गोदामों में करोड़ों रुपयों का अनाज सड़ रहा है। कांग्रेसनीत संप्रग सरकार की गलत नीतियों के चलते आम आदमी त्राहिमाम–त्राहिमाम कर रहा है। महंगाई की मार से लोग बेदम हो रहे हैं। नक्सलवाद पूरे देश में पैर पैसार रहा है। राष्ट्रमंडल खेल के नाम पर दलितों के पैसे लुटाये जा रहे हैं। ऐसे में भारतीय जनता पार्टी जैसे राष्ट्रवादी दल को अपने संघर्ष और तेज करने होंगे।

&jktsk'k dekj] jkph] >kj[kM

ikBdk ls fuonu

किसी भी पत्रिका को पठनीय बनाने में पाठक की उल्लेखनीय भूमिका होती है। 'कमल संदेश' में छपी खबर, लेख, संपादकीय या समसामयिक मुद्दों पर आपकी राय सादर आमंत्रित हैं। कृपया पत्र में अपना नाम व पूरा पता अवश्य दें।

हमारा पता है:

lsikndd ds uke i=
dey lns'k
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास
पीपी–66 सुब्रहमण्य भारती मार्ग
नई दिल्ली–110003

आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं:
kamalsandesh@yahoo.co.in

उनका कहना है ...

मैं कांग्रेस पार्टी को चेतावनी देना चाहता हूं कि वे स्वायत्तता की आड़ में भारत की एकता–अखंडता से खिलवाड़ न करें। कश्मीर में स्वायत्तता का अर्थ होगा भारत के टुकड़े–टुकड़े करना, भाजपा और देश इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा।

-नितिन गडकरी
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

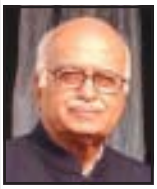

जम्मू–कश्मीर में स्थिति सचमुच ही अधिक चिन्ताजनक है। जम्मू–कश्मीर में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। यह पूर्णतः चरमरा चुकी है, जिससे वहां पृथकतावादी पैर जमा रहे हैं।

-लालकृष्ण आडवाणी
अध्यक्ष, भाजपा संसदीय दल

भगवा हमारे राष्ट्रध्वज के ऊपर है। भारत का राष्ट्रध्वज जहां जाएगा, भगवा उसके साथ जाएगा और वह देश और दुनिया में शांति फैलाएगा। वह आतंकवाद का प्रतीक नहीं हो सकता। यह भगवा था, जिसने हिन्दुस्तान को सारी दुनिया का गुरू बनाया।

-डॉ. मुरली मनोहर जोशी
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

केन्द्र और दिल्ली की कांग्रेस सरकारों की शुरू से ही यह नीति रही है कि बात करो गरीबों की और पोषण करो अमीरों की। यही कारण है कि दोनों सरकारों ने भ्रष्टाचार के सारे रिकार्ड तोड़ दिये हैं।

- वेंकैया नायडू,
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

भारत में किसान की जितनी दुर्दशा यूपीए सरकार के कार्यकाल में हुई है, उतनी भारत के इतिहास में कभी नहीं हुई। मौजूदा सरकार ने अन्नदाता देश भारत के किसानों को आत्महत्या करने के लिए विवश कर दिया है।

-राजनाथ सिंह
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

झारखंड में भाजपा सरकार : अवसर भी, चुनौती भी

झारखंड में तीसरी बार मुख्यमंत्री बनकर अर्जुन मुंडा ने यह बात तो तय कर दी कि वे वहां के नैसर्गिक आदिवासी ही नहीं राजनैतिक नेता है। किसी को पता नहीं चला और सारी बातें तय हो गई। हम जानते हैं कि ऐसी सरकार पर सदैव तलवार लटकी रहती है परन्तु झारखंड की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है जो झारखंड की गिरती राजनैतिक साख को थाम सके। अर्जुन मुंडा के लिए सामान्य बात नहीं है सरकार चलाना पर अब यह भी जरूरी है कि उन्हें हर हालात में अपने अथक प्रयत्नों से सभी को साथ लेकर यह पारी खेलनी होगी। कांग्रेसी लाख कहें पर सच्चाई तो यही है कि अभी वह खिसियानी बिल्ली की तरह छींका टूटने की बाट जोह रही हैं। भारतीय जनता पार्टी के प्रांतीय नेतृत्व को भी एक स्वर में श्री अर्जुन मुंडा के साथ खड़ा होना होगा। यह ऐसा समय है जब भाजपा ने झारखंड के विकास के लिए अपना अस्तित्व दांव पर लगा दिया है। कांग्रेस झारखंड में नेतृत्वहीन है। अन्य दलों में जो कुछ है वह जगजाहिर है। राजनीति में व्यक्तिगत रूप से दल चलाने वालों का कुछ समय तक तो प्रभाव देखा जा सकता है परन्तु वे कभी स्थायी तौर पर राजनीति का अंग नहीं बन सकते। भाजपा के लिए यह अवसर भी है और चुनौती भी। खासकर मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुंडा भारत के पहले आदिवासी मुख्यमंत्री हैं जिन्हें तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिला है। उन्हें भी अब राजनीतिक उदारता और विकास की नई इबारत लिखनी होगी।

बिहार : वर्तमान सरकार ही बिहार का भविष्य

बिहार में विधानसभा चुनाव की तैयारी जोर–शोर से प्रारम्भ हो गई। छह चरणों का यह चुनाव माह अक्टूबर–नवम्बर में देश की राजनीति को गरमाये रखेगा। बिहार ने विकास का रास्ता वर्षों बाद गत पांच वर्षों में देखा है। राजनीति में जब लोगों की आस्थाएं टूट रही हों, ऐसे में भाजपा गठबंधन की सरकार ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी के नेतृत्व में, जो जनआस्था और विश्वास पैदा किया है वह प्रशंसनीय है। भारतवासी यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि चाणक्य जैसे राष्ट्रीय चरित्र से युक्त बिहार राजनैतिक रूप से जागरूक है। यहां रग–रग में राजनीति है। यहां का व्यक्ति सजग भी है और गरल भी है। 'क्रांति' के मशाल की मिसाल, यहां का गांधी मैदान और राष्ट्रपिता और लोकनायक के आंदोलन की भूमि रही 'बिहार' को अभी विकास की महती आवश्यकता है। इस बात को पूरे बिहार ने अच्छी तरह से समझ लिया है।

विकास की राह पकड़ चुका बिहार अब पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहता। लोगों की रूहें कांप उठती हैं लालूजी के शासन काल की कहानियां और किस्से सुनकर 'कानून व्यवस्था' पर जो पकड़ भाजपा गठबंधन सरकार ने पायी है, वह वर्षों बाद संभव हो सका है। राजनीति को अपराध और भ्रष्टाचार से मुक्त करने का जो रास्ता बिहार में गत पांच वर्षों में बना है उसे यथावत जारी रखने के लिए आवश्यक है कि एनडीए की सरकार वहां पुनः बने।

भाजपा ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में जो राजनैतिक उदारता दिखाई है वह प्रशंसनीय है। यह चुनाव बिहार के नागरिकों की भी परीक्षा का समय है और उनके विवेक की भी परीक्षा है। हमें पूरा भरोसा है कि बिहार के 'मतदाता' आगामी विधानसभा चुनाव में जातिवादी राजनीति को शिकस्त देते हुए विकास का रास्ता ही चुनेगी। विकास का रास्ता यानि बिहार में भाजपा़ जद (यू) की पुनः सरकार बनाने का व्रत लेना।

जम्मू–काश्मीर के मौजूदा हालात में सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून हटाना आत्महत्या समान : भाजपा

12 सितम्बर को भारतीय जनता पार्टी की ओर से जम्मू और काश्मीर पर सीसीएस बैठक की पूर्व संध्या भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली, राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता श्री एस.एस. अहलूवालिया और भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री व मुख्य प्रवक्ता श्री रविशंकर प्रसाद की अत्यंत आवश्यक बैठक के बाद जारी वक्तव्य

पिछले तीन महीनों में अचानक ही काश्मीर घाटी की स्थिति बिगड़ गई है। सीमापार से समर्थित अलगाववादी ग्रुपों ने घाटी में हिंसा और आतंक का वातावरण पैदा कर दिया है। अलोकप्रिय मुख्यमंत्री अपने लोगों से पूरी तरह से अलग हो चुके हैं। यही समय है कि उनके स्थान पर किसी अन्य स्वीकार्य व्यक्ति को शासन की बागडोर सौंपी जाए। केन्द्रीय सरकार स्थिति से निपटने के लिए बुरी तरह से असहाय नजर आती है जिसके पास कोई दूरदृष्टि है ही नहीं।

ईद के अवसर पर यह भ्रम भी टूट गया कि कुछ शांतिप्रिय विरोध प्रदर्शनकारी राजनैतिक बयानबाजी कर रहे हैं। हिंसाग्रस्त भीड़ ने घाटी में कोहराम मचा कर लोगों के जान–माल को खतरे में डाल दिया है। सरकार का शासन पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। उसे इतना भी मालूम नहीं है कि भीड़ को अशांति फैलाने के लिए इकट्ठा होने की इजाजत नहीं दी जा सकती है।

राष्ट्र के लिए चिंता की बात यह है कि इसकी बजाय कि केन्द्र सरकार समस्या की गम्भीरता और इसके हल निकालने को समझ सके, वह तो आत्म–भ्रम में जी रही है कि वह सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून को समाप्त करने भी अलगाववादियों को संतुष्ट कर सकती है। अलगाववादियों की नीति एकदम साफ है। वे केन्द्र सरकार को भारत और जम्मू तथा काश्मीर राज्य के बीच सम्बंधों को शिथिल बनाने पर विवश करना चाहते हैं। यदि एक बार सरकार अपने होश गंवा देती है तो अलगाववादी भारत सरकार द्वारा दी गई रियायतों को खारिज कर देंगे और उनका अगला कदम तब तक चलता रहेगा जब तक वे 'आजादी' के उद्देश्य की अपनी घोषणा को पूरा नहीं कर लेते हैं। पिछले दो दिनों की घटनाओं ने लोगों का यही विश्वास पक्का किया है कि घाटी में सुरक्षा वातवरण मजबूत किए जाएं, न कि इन्हें कम किया जाए। अलगाववादियों का हिंसात्मक उद्देश्य एकदम साफ है। किन्तु केन्द्र सरकार ही समस्या की भयंकरता और इसकी गम्भीरता का अहसास नहीं कर पा रही है। वह लोगों को बताना चाहती है कि श्रीनगर और आसपास के इलाके अशांत क्षेत्र नहीं है और इसलिए 'एफएसपीए' को इन इलाकों में लागू करने की आवश्यकता नहीं है।

दो अलग–अलग दृष्टिकोण हैं– एक दृष्टिकोण भारतीय सेना और सुरक्षा बलों का है जिसे रक्षा मंत्रालय सामने रख रही है तो दूसरा दृष्टिकोण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का है जो वोट बैंक की राजनीति से प्रभावित है। भारतीय जनता पार्टी केन्द्र सरकार को चेतावनी देना चाहती है कि यह समय वोट बैंक की राजनीति को संतुष्ट करने का नहीं है। यह समय कारगर कदम उठाने का है। सरकार को किसी भी हालत में राज्य के अशांत क्षेत्रों से 'एफएसपीए' उठाने पर विचार नहीं करना चाहिए। सुरक्षा वातावरण मजबूत बनाए जाने चाहिए, शरारती तत्वों को भय महसूस होना चाहिए और उनकी मनमानी नहीं चलने देनी चाहिए। यदि सरकार इसे समझ नहीं पाती है तो देश के सामने खड़ी चुनौती और भी विकलराल रूप धारण कर लेगी। ■

भारतीय जनता पार्टी केन्द्र सरकार को चेतावनी देना चाहती है कि यह समय वोट बैंक की राजनीति को संतुष्ट करने का नहीं है। यह समय कारगर कदम उठाने का है। सरकार को किसी भी हालत में राज्य के अशांत क्षेत्रों से 'एफएसपीए' उठाने पर विचार नहीं करना चाहिए। सुरक्षा वातावरण मजबूत बनाए जाने चाहिए, शरारती तत्वों को भय महसूस होना चाहिए और उनकी मनमानी नहीं चलने देनी चाहिए। यदि सरकार इसे समझ नहीं पाती है तो देश के सामने खड़ी चुनौती और भी विकलराल रूप धारण कर लेगी।

राष्ट्रीय मीडिया कार्यशाला सम्पन्न

Hkkरतीय जनता पार्टी की दो–दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया कार्यशाला 13 व 14 सितम्बर, 2010 को सम्पन्न हुई। यह कार्यशाला दिल्ली के रफी मार्ग, स्थित कांस्टीट्यूश्न क्लब में आयोजित थी। इस कार्यशाला में सभी प्रदेशों से प्रदेश मीडिया प्रभारी, प्रदेश प्रवक्ता एवं प्रदेश स्तर से इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में होने वाली चर्चाओं में भाग लेने वाले अधिकृत नेतागण सम्मिलित हुए।

इस कार्यशाला का शुभारंभ 13 सितम्बर, 2010 को प्रातः 11 बजे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने दीप प्रज्जवलित कर किया। कार्यशाला के प्रथम सत्र को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने सम्बोधित किया। उन्होंने अपने उद्बोधन में वर्तमान राजनीति एवं भाजपा मीडिया प्रकोष्ठ की भूमिका विषय पर विस्तार से अपने विचार रखे। इस सत्र का संचालन भाजपा प्रवक्ता एवं सांसद श्री प्रकाश जावडेकर ने किया।

कार्यशाला के दूसरे सत्र को भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं मुख्य प्रवक्ता श्री रवि शंकर प्रसाद ने संबोधित किया। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष में मीडिया की भूमिका विषय पर सारगर्भित उद्बोधन दिया। इस सत्र का संचालन सांसद, श्री चंदन मित्रा ने किया। प्रथम दिवस के तृतीय सत्र को राज्यसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने संबोधित किया। उन्होंने देशभर से आए प्रवक्ता, मीडिया प्रभारी एवं टीवी परिचर्चाओं में भाग लेने वाले नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को मीडिया, से संबंधित कार्य प्रेस वक्तव्य जारी करने, प्रेस वक्तव्य तैयार करने एवं प्रेस से वार्ता करने के दौरान बरते जाने वाली सावधानियों की ओर ध्यान दिलाया। इस सत्र का संचालन राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण ने किया। चौथा सत्र इलैक्ट्रोनिक मीडिया एवं राजनीति विषय पर केन्द्रित था इस सत्र में ख्याति प्राप्त टी.वी मीडिया के वरिष्ठ पत्रकार, स्टार न्यूज के श्री दीपक चौरसिया, टाइम्स नाऊ से श्रीमती नाविका कुमार एवं एनडी टीवी के श्री पंकज पचौरी से प्रतिनिधियों ने विचार–विमर्श किया। इस सत्र का संचालन सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव प्रताप रूडी ने किया। प्रथम दिवस के पाचवें सत्र प्रवक्ताओं के शिष्ट मंडल से प्रतिनिधियों की विचार चर्चा का सत्र था। इस शिष्ट मंडल में मुख्य प्रवक्ता श्री रवि शंकर प्रसाद, सांसद श्री चंदन मित्रा, सांसद श्री बलवीर पुंज, सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव प्रताप रूडी सम्मिलित थे तथा सत्र का संचालन सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने किया। इस सत्र में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने पत्रकारों की भूमिका निभाई एवं प्रवक्ताओं के शिष्ट मंडलों से कठिन से कठिन राजनीतिक प्रश्न पूछें, यह सत्र कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण था।

दूसरे दिवस कार्यशाला का छठा सत्र प्रातः 10 बजे प्रारम्भ हुआ। इस सत्र को भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री रामलाल ने संबोधित किया। उन्होंने भाजपा की विचारधारा एवं संगठन कार्य विषय पर आए हुए प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया। इस सत्र का संचालन भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रामनाथ कोविन्द ने किया। कार्यशाला के सातवें सत्र को लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने सम्बोधित किया। उन्होंने देशभर से आए प्रतिनिधियों को मीडियाकर्मियों के प्रति आचार–व्यवहार के सन्दर्भ मे महत्वपूर्ण जानकारियाँ दीं। इस सत्र का संचालन सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने किया। इस कार्यशाला के आठवें सत्र को श्री विनय सहत्रबुद्धे तथा सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री तरूण विजय ने सम्बोधित किया। उन्होंने मीडिया कार्य हेतु शोध एवं सन्दर्भ की आवश्यकता विषय पर आए हुए प्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया। इस सत्र का संचालन राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण ने किया। कार्यशाला के नौवे सत्र को टी0वी0 पत्रकार श्री उमेश उपाध्याय ने सम्बोधित किया। इस सत्र का संचालन सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने किया। द्वितीय दिवस का दसवां सत्र प्रिंट मीडिया एवं राजनीति विषय से सन्दर्भित था इस सत्र में ख्याति प्राप्त पत्रकार हिन्दुस्तान टाइम्स के श्री शेखर अय्यर एवं पीटीआई के श्री अजय कौल एवं सांसद व राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री तरूण विजय से आए हुए प्रतिनिधियों ने विचार–चर्चा की। इस इस सत्र का संचालन सांसद श्री चंदन मित्रा ने किया। द्वितीय दिवस के अन्तिम समापन सत्र को भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने सम्बोधित किया। इस सत्र का संचालन भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रामनाथ कोविन्द ने किया।

इस दो–दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया कार्यशाला का सुव्यवस्थित आयोजन राष्ट्रीय मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजक श्री श्रीकांत षर्मा ने किया। कार्यशाला के अंत में सांसद एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री राजीव प्रताप रूडी ने आभार प्रदर्शन किया। ■

मीडिया कार्यशाला का उद्घाटन करते भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, साथ में हैं भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्तागण सर्वश्री शाहनवाल हुसैन, राजीव प्रताप रूडी, रामनाथ कोविंद तथा सांसद चंदन मित्रा

जनता से अटूट सम्पर्क बने रहना चाहिए : लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा प्रवक्ताओं और मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजकों की राष्ट्रीय कार्यशाला में श्री लालकृष्ण आडवाणी का समापन भाषण

भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ताओं और मीडिया प्रकोष्ठ के संयोजकों की नई दिल्ली में आयोजित हुआ दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समारोह कार्यक्रम में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस कार्यशाला को आयोजित करने में श्री रविशंकर प्रसाद द्वारा की गई पहल की, मैं प्रशंसा करता हूं और मुझे समापन सम्बोधन के लिए आमंत्रित करने हेतु धन्यवाद। हम मीडिया संचालित समाज में रहते हैं। सामाजिक गतिविधियों का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो मीडिया से अछूता रहा हो। और यह राजनीति के बारे में भी सत्य है। लगभग 60 वर्ष पूर्व जब मैं भारतीय जनसंघ का कार्यकर्ता बना था तब से लेकर आज तक राजनीति पर मीडिया के प्रभाव में हुए आमूलचूल परिवर्तनों का मैं अक्सर उल्लेख करता रहा हूं।

दीवारों पर लिखने से वेबसाइटों तक, मैं उन सभी परिवर्तनों का साक्षी रहा हूं जो राजनीतिक दलों द्वारा लोगों को अपनी बात कहने के लिए उपयोग

मीडिया कार्यशाला के दौरान भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी का पुष्पहार से अभिनंदन करते मीडिया प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री श्रीकांत शर्मा, साथ में हैं लोकसभा में पार्टी के उपनेता श्री गोपीनाथ मुंडे।

में लाए जाते रहे हैं। प्रौद्योगिकी के प्रत्येक नए विकास के साथ राजनीतिक प्रतिष्ठान और लोगों के बीच की दूरी को कम करने में मीडिया की ताकत बढ़ी है।

प्रौद्योगिकी संदेश देने के स्वरुप को बदल सकती है और संदेश को तीव्रता और विस्तार से प्रेषित करने की शक्ति भी। हालांकि, प्रौद्योगिकी संदेश को नहीं बदल सकती। संदेश, राजनीतिक प्रतिष्ठान के विचारों और व्यवहार से निर्धारित होता है। डा. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना की। पहले आम चुनाव में जनसंघ के तीन सांसद–दो पश्चिम बंगाल से जिसमें एक डा.

मुकर्जी स्वयं थे और एक राजस्थान से चुने गए।

मैं पहले आम चुनाव से पार्टी का कार्यकर्ता रहा हूं और 2009 तक लोकसभा के पंद्रह चुनावों में या तो एक प्रचारकर्ता या फिर एक उम्मीदवार के रूप में भाग लेने का सौभाग्य मुझे मिला है।

1952 से लेकर लगभग इन 6 दशकों में मैंने पाया कि मतदाता अक्सर एक राजनीतिक दल की उस छवि से ज्यादा प्रभावित होते हैं जो उनके मन में बनी होती है बनिस्बत उसकी सच्चाई के। लोगों के दिमाग में राजनीतिक दल की छवि अक्सर पार्टी की वास्तविकता से अलग होती है। पार्टी के विरोधी इसी को उछालने पर ज्यादा समय लगाते हैं बजाय अपनी पॉजिटिव विशेषताओं को बताने के।

मीडिया प्रभारियों और प्रवक्ताओं को यह अहसास रहना चाहिए कि पार्टी ने उनको एक अत्यन्त महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। आपका काम लोगों की नजरों में और मीडिया के साथ आपका सम्बन्ध ऐसा होना चाहिए–जो सुनिश्चित करे कि लोग स्वीकारने लगें कि भाजपा सचमुच में एक विश्वसनीय राष्ट्रवादी पार्टी है जो सुशासन और स्वच्छ राजनीति के लिए प्रतिबद्ध है।

1952 से ही मैं देख रहा हूं कि डा. मुकर्जी जैसे उत्कृष्ट राजनेता और देशभक्त द्वारा स्थापित तथा दीनदयालजी, नानाजी, ठाकरेजी और अटलजी जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा पोषित–पार्टी को साम्प्रदायिक और संकीर्ण के रूप में बदनाम किया जाता रहा है।

एक सौ से ज्यादा यहां जुटे मीडिया प्रभारियों और प्रवक्ताओं को यह अहसास रहना चाहिए कि पार्टी ने उनको एक अत्यन्त महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। आपका काम लोगों की नजरों में और मीडिया के साथ आपका सम्बन्ध ऐसा होना चाहिए–जो सुनिश्चित करे कि लोग स्वीकारने लगें कि भाजपा सचमुच में एक विश्वसनीय राष्ट्रवादी पार्टी है जो सुशासन और स्वच्छ राजनीति के लिए प्रतिबद्ध है।

मैं यह बताना चाहता हूं हम मीडिया के माध्यम से लोगों को जो कुछ भी बताना चाहते हैं–उस हमारे संदेश की विषय सामग्री–ऐसी हो कि लोगों को यह वास्तविक, सत्य और समाज तथा राष्ट्रहित में लगे।

दूसरा, जिस प्रकार हम अपने संदेश लोगों तक भिजवाना चाहते हैं तो उसी प्रकार हमें भी जनता के संदेश को सुनने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस कार्यशाला में टी.वी. पैनल और प्रिंट मीडिया पैनल के साथ आपका संवाद बहुत अच्छा रहा।

दूसरे शब्दों में, हमारी पार्टी, हमारे नेता और कार्यकर्ता, हमारे सांसद, विधायक और पार्षद, हमारे मंत्री तथा हमारी सरकारों को कभी भी जनता से अपना सम्पर्क नहीं खोना चाहिए। हमें कभी भी यथार्थ से अलग–थलग नहीं होना चाहिए।

यह बात सिर्फ हमारे प्रवक्ताओं और मीडिया प्रकोष्ठ की टीम के लिए ही नहीं अपितु सामान्य रुप से पार्टी के सभी पदाधिकारियों के लिए भी सत्य है। मीडिया प्रबंधन महत्वपूर्ण है। लेकिन, एक राजनीतिक पार्टी के लिए लोगों के मुद्दे और राष्ट्र के मुद्दों के इर्द–गिर्द केंद्रित जनाधारित राजनीतिक सक्रियता से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं।

मित्रों, जब हम मीडिया के साथ पार्टी के संवाद की बात करते हैं तो मीडिया तंत्र में आई कमियों पर टिप्पणी न करना असंभव है। पिछले आम चुनावों में भारतीय मीडिया में एक विशेष किस्म की घातक प्रवृत्ति उभरी है। और यह है ''पेड न्यूज'' की प्रवृत्ति। इस मुद्दे पर संसद में और प्रेस के कुछ क्षेत्र में भी चर्चा हुई है। ''पेड न्यूज'' की बुराई मीडिया के अत्यधिक व्यावसायीकरण का सीधा नतीजा है। निस्संदेह मीडिया भी एक व्यवसाय है। लेकिन मीडिया संगठनों के मालिकों को इसे केवल व्यवसाय या अन्य व्यवसायों की तरह नहीं देखना चाहिए। समाचार पत्र, पत्रिकाएं और टी.वी. चैनलों को मीडिया धर्म के प्रति वफादार होना चाहिए जैसेकि राजनीति अपने धर्म के प्रति रहनी चाहिए। जब भाजपा गठित हुई तब यह एक छोटी पार्टी थी और इसकी पहचान के लिए मात्र एक राजनीतिक नेता डा. मुकर्जी थे। और पार्टी की स्थापना के दो वर्षों में ही वह हमारे बीच से चले गए। जम्मू–कश्मीर में हिरासत के दौरान रहस्यमयी परिस्थितियों में उनकी मौत हुई। जम्मू एवं कश्मीर के शेष भारत के साथ पूर्ण विलय के मुद्दे पर वह शहीद हो गए। हमारे अस्तित्व के पहले तीन दशकों में जनसंघ के बारे में अनेक भ्रांत धारणाएं सामान्यतया मानी जाती थीं:

1. हम एक शहरी पार्टी हैं।
2. यह हिन्दी प्रदेशों तक सीमित है।
3. यह उच्च वर्गों (जाति) की पार्टी है।

इसलिए यदि हम उत्तर भारत के कुछ नगर निगमों और राज्यों में यदि सत्ता में भी आ गए तो भी हम एक अखिल भारतीय पार्टी नहीं बन सकते और इसलिए कभी भी केन्द्र में सत्ता में नहीं आ सकते–इन तीनों भ्रांत धारणाओं का यही सार था।

आप जरा स्मरण कीजिए हम 1984 में कितनी दयनीय स्थिति में पहुंच गए थे। लोकसभा की 543 सीटों में से भाजपा

केवल दो सीट जीत सकी थी! और अगले ढाई दशक में भाजपा न केवल लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी बनी बल्कि उसने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्र को एक साथ छह वर्षों तक स्थिर तथा सफल सरकार दी। मुझे आज आपके साथ बात करते हुए गर्व की अनुभूति हो रही है कि हम इन सभी विरूपित छवियों को दूर करने में सफल रहे। वास्तव में मैंने अक्सर कहा है कि ''जनसंघ–भाजपा की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने भारत की एकदलीय राजनीति को दो–ध्रुवीय राजनीति में परिवर्तित कर दिया।''

संप्रग सरकार का कश्मीर में आत्मसमर्पण

मित्रों, कई मोर्चों पर देश की स्थिति चिन्ताजनक बनी हुई है। जम्मू–कश्मीर में स्थिति सचमुच ही अधिक चिन्ताजनक है। जम्मू–कश्मीर में सरकार नाम की कोई चीज नहीं है। यह पूर्णतः चरमरा चुकी है, जिससे वहां पृथकतावादी पैर जमा रहे हैं।

मगर कश्मीर में गड़बड़ी के लिए श्रीनगर की सरकार ही जिम्मेदार नहीं है। नई दिल्ली में संप्रग सरकार भी पूरी तरह दिशाविहीन व रीढ़विहीन है। गुजरने वाला हर दिन हमारी इस आशंका को मजबूत करता है कि संप्रग सरकार पाक–समर्थित पृथकतावादियों के सम्मुख घुटने टेकने वाली है।

कश्मीर मुद्दे के ''राजनीतिक समाधान'' की बात की जा रही है। पृथकतावादियों को माकूल जवाब देने के बजाय सरकार सुरक्षा बलों को बुरा–भला कह रही है। ए.एफ.एस. पी.ए. को नरम करने तथा वहां से सुरक्षाबलों को हटाने की लगातार बात की जा रही है। यह 1947 के बाद की भारत की एकता को छिन्न–भिन्न करने की इस्लामाबाद की रणनीति के समक्ष घुटने टेकने के अलावा अन्य कुछ नहीं है।

यह वही बात है जिसका पाकिस्तान के सैनिक शासक 1971 के बांग्लादेश मुक्ति युद्ध में हुई अपनी पराजय के बाद से सपना देख रहे हैं। यह एक शर्मनाक विडम्बना है कि यदि कांग्रेस की एक प्रधानमंत्री उस युद्ध में भारत की ऐतिहासिक विजय की जिम्मेवार थीं तो वहीं कांग्रेस का अन्य 'सैट–अप' कश्मीर में भारत पर पाकिस्तान के छद्म युद्ध के समक्ष भारत के आत्मसमर्पण के लिए कार्य कर रहा है।

कश्मीर को 'अधिकतम स्वायत्तता'' प्रदान करने की चर्चा हो रही है। इसका खुलासा होने पर इसका अर्थ जम्मू–कश्मीर की इसकी 1953 पूर्व की स्थिति में पहुंचना है। अनुच्छेद 370 को निरस्त करने की बजाय संप्रग सरकार कश्मीर में हमारे वर्षों तथा दशकों के सामूहिक लाभ को गंवाने पर तुली हुई है– ऐसा इसलिए कि सरकार के पास इच्छा, दृष्टि, प्रतिबद्धता तथा क्षमता का अभाव है।

हम सभी जानते हैं कि 1953 से जम्मू–कश्मीर में केन्द्र सरकार ने अपनी कई शक्तियों का विस्तार किया है। ऐसा प्रमुखतः हमारी पार्टी के उस साहसिक संघर्ष के कारण हुआ जो भारतीय जनसंघ द्वारा छेड़ा गया था तथा जिसमें डा. मुकर्जी की शहादत की विशेष भूमिका थी। क्या मैं प्रधानमंत्री तथा श्रीमती सोनिया गांधी को याद दिला सकता हूं कि पंडित नेहरु तक ने संसद में कहा था कि अनुच्छेद 370 पूरी तरह एक अस्थायी उपबन्ध है।

27 नवम्बर, 1963 को उन्होंने लोकसभा में कहा था–''हमारा मत है कि संविधान में यथा उल्लिखित अनुच्छेद 370 अर्थात् अस्थायी उपबंध है।'' स्थिति यह है.... जैसाकि गृहमंत्री ने इंगित किया है कि इसका प्रभाव कम हुआ है और विगत वर्षों में कई उपाय किए गए हैं जिनसे भारत संघ के साथ कश्मीर के संबंध और निकटतर हुए हैं। अनुच्छेद 370 के समापन की दिशा में इसके ''धीरे–धीरे समाप्त'' होने की गति बढ़ाने की बजाय संप्रग सरकार पृथकतावादियों को खुश करने के लिए इसे उलटने के लिए आमादा है।

मैं, संप्रग सरकार को याद दिलाना चाहूंगा कि जब जून 2000 में जम्मू–कश्मीर विधान सभा ने तथाकथित ''स्वायत्तता प्रस्ताव'' पारित किया था तब वाजपेयी सरकार ने इसे एकदम अस्वीकृत कर दिया था। मैंने उस अवसर पर मीडिया से कहा थाः 'इसकी स्वीकृति से घड़ी की सुइयां उल्टी चलने लगेंगी और राष्ट्र की अखंडता के साथ राज्य के लोगों की आकाक्षाओं के सामंजस्य की स्वाभाविक प्रक्रिया उलट जाएगी। यदि सरकार इसे स्वीकार करेगी तो इससे ऐसी प्रवृत्तियों को बल मिलेगा जो राष्ट्रीय एकता के लिए अनुकूल नहीं होगी।'

हम सब सभी राज्यों को अधिक शक्तियां प्रदान किए जाने के पक्षधर हैं जैसाकि परिसंघवाद की अपेक्षा है। किन्तु स्वायत्तता के नाम से हम कश्मीर के एकीकरण की प्रक्रिया को उलटे जाने की अनुमति नहीं दे सकते हैं।

अतः मैं संप्रग सरकार को सावधान करना चाहूंगा कि यदि वह जम्मू–कश्मीर में पृथकतावादियों के मंसूबों के सामने झुकने का निर्णय करेगी तो देश उन्हें क्षमा नहीं करेगा। मैंने सोचा कि इस कार्यशाला के अवसर पर आप सबके सामने यह स्पष्ट करने हेतु यह उल्लेख करूं कि जम्मू –कश्मीर में दांव पर क्या–क्या लगा है ताकि आप इसे फिर लोगों के सामने स्पष्ट रूप से बता सकें। जहां तक भाजपा का सम्बन्ध है, आगामी महीनों में यह हमारे जनान्दोलन का प्रमुख मुद्दा होगा। ■

राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर 'भारत प्रथम अभियान' चलाएगा भाजयुमो

भाजयुमो की राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक में भाग लेते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अनंत कुमार, राष्ट्रीय महामंत्री व युवा मोर्चा के प्रभारी श्री धर्मेन्द्र प्रधान, युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग ठाकुर एवं भाजपा राष्ट्रीय सचिव श्री किरीट सोमैया।

भारतीय जनता युवा मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यसमिति सह अभ्यास वर्ग का आयोजन 12, 13, 14 सितम्बर, 2010 को रामभाऊ म्हालगी प्रबोधनी, मुम्बई में संपन्न हुआ।

12 सितम्बर को अभ्यास वर्ग का उद्घाटन वरिष्ठ भाजपा नेता एवं सांसद डा. मुरली मनोहर जोशी जी ने किया। डा. जोशी ने जम्मू कश्मीर की वर्तमान चिंताजनक परिस्थिति पर बोलते हुए कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि जम्मू कश्मीर के मुद्दे को लेकर देश भर में जनजागरण किया जाना चाहिए।

13 सितम्बर को विश्वविख्यात लेखक श्री चेतन भगत ने वर्तमान में युवाओं की मनोदशा एवं सोच विषय पर सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युवाओं की प्राथमिकताएं बदल रही हैं और राजनीतिक दलों को युवाओं की बदलती सोच व प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें बड़े पैमाने पर राजनीति में शामिल करने की योजना बनानी चाहिए। अभ्यास वर्ग को राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री. रामलाल एवं राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री. वी. सतीश ने ''विचार परिवार'' व वैचारिक प्रेरणा'' विषयों पर संबोधित किया।

अभ्यास वर्ग के उद्घाटन सत्र में पार्टी के राष्ट्रीय सचिव व मोर्चे के सहप्रभारी श्री नवजोत सिंह सिद्धू, सांसद भी उपस्थित थे। अभ्यास वर्ग का समापन राष्ट्रीय महासचिव एवं युवा मोर्चा के प्रभारी श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने राष्ट्र के समक्ष चुनौतियां और युवा मोर्चा विषय पर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए किया।

14 सितम्बर को राष्ट्रीय कार्यसमिति का उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने किया। उद्घाटन सत्र में भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय सचिव व युवा मोर्चे की सह प्रभारी सुश्री वाणी त्रिपाठी ने नितिन गडकरी जी का साक्षात्कार लिया जिसमें देश की वर्तमान परिस्थितियों में भाजपा की भूमिका एवं पार्टी की युवा मोर्चे से अपेक्षाओं विषय पर प्रश्न किये गए।

कार्य समिति ने राजनैतिक व जम्मू कश्मीर की वर्तमान परिस्थतियों से जुड़े दो प्रस्ताव पास किये और तय किया कि सितम्बर के दूसरे पखवाड़े में देश भर में इंडिया फर्स्ट कैम्पेन (भारत प्रथम अभियान) के तहत जनजागरण सभाएं की जायेंगी और आवश्यकता पड़ी तो कार्यकर्ता श्रीनगर जाने से भी नहीं चूकेंगे।

युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनुराग सिंह ठाकुर, सांसद ने कार्यसमिति में आये सभी अतिथियों एवं सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि देश की वर्तमान असाधारण चिंताजनक परिस्थितियों में यूपीए जैसी राष्ट्रीय हितों के प्रति गैर जिम्मेदार सरकार के कारण युवा मोर्चा से स्वाभाविक रूप से देश एवं पार्टी दोनों की अपेक्षायें बहुत बढ़ गई हैं।

समापन सत्र में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री अनन्त कुमार ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि आज फिर से जयप्रकाश नारायण की तर्ज पर एक युवा आन्दोलन खड़ा करने की आवश्यकता है। ■

जातिवाद बनाम विकास की लड़ाई

राज्य में एनडीए के पक्ष में लहर

–संजीव कुमार सिन्हा

बिहार में चुनावी बिगुल बज चुका है। 243 सदस्यीय विधानसभा का चुनाव 21 अक्तूबर से 20 नवंबर तक छह चरणों में होना हैं। नौ करोड़ की आबादी वाले बिहार के पांच करोड़ 50 लाख 88 हजार 402 मतदाता अपने 243 विधायकों का चयन करेंगे। सभी राजनीतिक दल कमर कसने शुरू कर चुके हैं। चुनाव की रणनीतियां तैयार की जा रही है। गौरतलब है कि इस साल पूरे देश में केवल बिहार में ही विधानसभा चुनाव होने हैं, इसलिए राजनीतिक दलों के लिए यह चुनाव प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका है। इस बार का चुनाव इसलिए भी खास है कि राज्य में पहली बार विकास के नाम पर चुनाव लड़े जा रहे हैं।

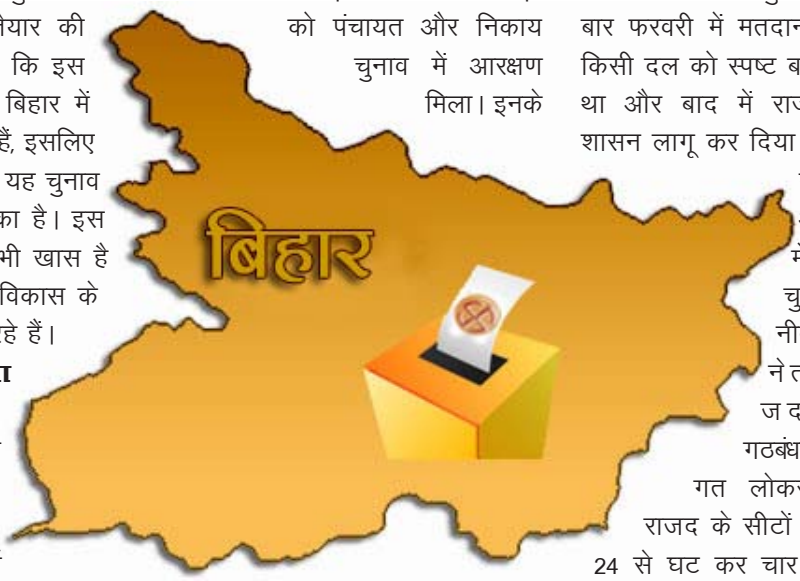

राज्य में विकास की गंगा बही

गौरतलब है कि देश की आजादी के बाद बिहार संपन्न राज्यों में शुमार होता था लेकिन पंद्रह वर्ष के लालू–राबड़ी के शासन–काल में इसने जहां अपनी पहचान खो दी और पिछड़ेपन का पर्याय बनकर रह गया वहीं गत पांच सालों में एनडीए शासन के दौरान राज्य की गरिमा बहाल हुई। जदयू नेता व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तथा भाजपा नेता व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के कुशल नेतृत्व में बिहार में विकास की गंगा बही।

राज्य में आए बदलाव को साफ देखा जा सकता है। सरकार ने पांच वर्षों में 40 से अधिक योजनाएं प्रारंभ कीं। स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली और सड़क को लेकर अभूतपूर्व विकास हुए। जो बिहार आतंक और भय का पर्याय बन चुका था वहां कानून के बल पर शासन चलने लगा। अपराध और अपहरण घटा। दंगा व जातीय नरसंहार से मुक्त हुआ। नक्सली समस्याओं पर अंकुश लगा। पिछड़ों में से अति पिछड़ों को पंचायत और निकाय चुनाव में आरक्षण मिला। इनके आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए साढ़े पांच सौ करोड़ रूपये की योजनाएं शुरू की गयीं। तो यानी जिस बिहार की पहचान को लोग हिंसा से जोड़ते थे आज वहीं राज्य विकास की रोशनी से जगमगाने लगा है।

राजनीतिक परिदृश्य

इस बार बिहार में त्रिकोणीय मुकाबला भाजपा–जदयू एनडीए गठबंधन, कांग्रेस तथा राजद–लोजपा के बीच होगा। सुविदित है कि राजद प्रमुख लालू यादव ने 'एमवाई' यानी मुस्लिम–यादव समीकरण के आधार पर बिहार में 15 साल तक राज किया। लेकिन इस दौरान मुस्लिम समुदाय का विकास नहीं हो पाया। उनकी मूलभूत समस्याओं को दूर करना तो दूर, ये लगातार बढ़ती ही गयीं।

गौरतलब है कि 2005 में राज्य में दो बार विधानसभा चुनाव हुए थे। पहली बार फरवरी में मतदान हुआ था और किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था और बाद में राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया था। राज्य में फिर अक्टूबर–नवम्बर में विधानसभा चुनाव हुए जिसमें नीतीश कुमार के नेतृत्व में जदयू–भाजपा गठबंधन सत्तारूढ़ हुआ। गत लोकसभा चुनाव में राजद के सीटों की संख्या जहां 24 से घट कर चार पर पहुंच गयी वहीं लोजपा का खाता भी नहीं खुला और खुद रामविलास पासवान भी चुनाव नहीं जीत पाए।

नये परिसीमन से व्यापक परिवर्तन हुए हैं। 47 क्षेत्रों का अस्तित्व बदलने से उनके नाम बदल गये हैं। एक दर्जन सुरक्षित क्षेत्र सामान्य और सामान्य क्षेत्र सुरक्षित हो गये हैं। लगभग 200 विधानसभा क्षेत्रों का भूगोल बदलने से उन क्षेत्रों का सामाजिक समीकरण भी बदल गया है।

राज्य में चुनाव की तैयारियां भी जोरों पर हैं। भारतीय जनता पार्टी के बिहार प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सी.पी. ठाकुर ने पूरे प्रदेश में जन–नमन यात्रा निकालकर पार्टी की विचारधारा और सरकार की उपलब्धियों से जन–जन को अवगत कराया। विभिन्न जिलों में यात्रा का अभूतपूर्व स्वागत हुआ। भाजपा बिहार प्रदेश चुनाव प्रभारी श्री अनंत कुमार और सहप्रभारी श्री धर्मेंद्र प्रधान भी प्रदेश में सघन प्रवास और कार्यकर्ताओं से लगातार संवाद करके पार्टी की रणनीति को मजबूत बनाने में जुटे हुए हैं।

इधर कांग्रेस ने सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का मन बनाया है। मायावती की पार्टी बसपा का भी दम–खम के साथ चुनाव में उतरने का इरादा है। इस सब का नुकसान लालू–रामविलास की पार्टी को होना तय है। कांग्रेस के महासचिव राहुल गांधी बिहार का लगातार दौरा कर रहे हैं और अपने भाषणों में लोगों से विकास की राजनीति को अमलीजामा पहनाने के लिए कांग्रेस के साथ चलने का आह्वान करते हैं लेकिन विडंबना देखिए कि उनकी पार्टी का दामन अधिकांशतः दागदार और अपराधिक नेता ही थाम रहे हैं।

विधानसभा चुनाव को लेकर लालू और पासवान दोनों के बीच समझौते हुए हैं। इसके मुताबिक राजद 168 और लोजपा 75 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेगी। लालू और रामविलास सांप्रदायिक राजनीति करने में जुटे हैं। इस बार वे जातीय समीकरण के तहत अपने 'माई समीकरण' को विस्तार देते हुए इसमें दलित को भी जोड़ना चाहते हैं। विदित हो कि फरवरी 2005 में लालू यादव अपनी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बनाना चाहते थे, जबकि रामविलास पासवान ने किसी मुस्लिम को मुख्यमंत्री बनाने की घोषणा की थी। इसलिए दोनों में समझौता नहीं हो पाया। लेकिन दोनों नेता अवसरवाद की पराकाष्ठा को पार करते हुए अपने की वायदों से मुकर गये। लालू यादव मुख्यमंत्री के उम्मीदवार घोषित हुये और रामविलास पासवान ने अपने छोटे भाई पशुपति पारस को उपमुख्यमंत्री का दावेदार घोषित किया। अवसरवादी और जातिवादी राजनीति का यह निकृष्ट उदाहरण है।

इस चुनाव में भाकपा, माकपा, भाकपा माले – सब एक साथ मिल कर चुनाव लड़ रहे हैं। लेकिन बिहार की राजनीति में वामपंथी बेअसर हो चुके हैं। राज्य में तीसरा मोर्चा यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट भी अस्तित्व में आया है। पिछले दिनों दिल्ली स्थित जामा मसजिद के शाही इमाम मौलाना सैयद अहमद बुखारी व विधायक ददन पहलवान ने प्रेस वार्ता के दौरान बिहार के नेताओं पर जम कर भड़ास निकाली।

बिहार विधानसभा में सीटों की वर्तमान स्थिति की बात करें तो 2005 के विधानसभा चुनाव में जदयू 139 सीटों पर चुनाव लड़ा था। पिछले चुनाव में उसे 20.46 फीसदी वोटों के साथ 88 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। मौजूदा विधानसभा की 243 सीटों में जनता दल–यू के पास 89 सीटें हैं और वह भाजपा की 55 सीटों के साथ सत्ता में हैं। दूसरी राष्ट्रीय जनता दल के पास 52 और उसकी सहयोगी लोकतांत्रिक जनता पार्टी के पास 9 सीटें हैं, कांग्रेस के खाते में 8 सीटें हैं जबकि अन्य के पास 30 सीटें हैं।

बिहार में जाति की जड़ें बहुत गहरी है। लेकिन मतदाता अब सजग हो गया है। उसने राजद और एनडीए का शासन देखा है। इसलिए इस बार उसने जातिवादी राजनीति का सफाया करने का मन बना लिया है। राज्य में इस बार हो रहे विधानसभा चुनाव में जातिवादी राजनीति बनाम विकास की राजनीति की लड़ाई में फिलहाल विकास के पहिये को गति प्रदान करने वाले एनडीए का पलड़ा भारी नजर आ रहा है।

जाति नहीं, विकास है मुद्दा

जातिवाद में बिहार की राजनीति का सबसे बड़ा रोग है। राज्य में चुनाव का शंखनाद होने के बाद जाति के अपने–अपने समीकरण की चर्चा जोर पकड़ने लगी है। लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने ब्लॉग पर पोस्ट किया : भरोसा है कि चंद माह बाद होने वाले राज्य विधानसभा के चुनाव में जाति इस बार मुद्दा नहीं बनेगी। मतदाता जाति के बजाय विकास के पैमाने पर तौल कर अपनी पसंद के उम्मीदवारों के पक्ष में मतदान करेंगे।

बिहार में जाति की जड़ें बहुत गहरी है। लेकिन मतदाता अब सजग हो गया है। उसने राजद और एनडीए का शासन देखा है। इसलिए इस बार उसने जातिवादी राजनीति का सफाया करने का मन बना लिया है। राज्य में इस बार हो रहे विधानसभा चुनाव में जातिवादी राजनीति बनाम विकास की राजनीति की लड़ाई में फिलहाल विकास के पहिये को गति प्रदान करने वाले एनडीए का पलड़ा भारी नजर आ रहा है। ■

राष्ट्रीय अखण्डता और सुरक्षा के मामले में केन्द्र सरकार दिशाहीन व भ्रमित : तरुण विजय

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और सांसद श्री तरूण विजय ने 11 सितम्बर, 2010 को पत्रकारों से चर्चा करते हुए जम्मू कश्मीर और पूर्वांचल के मामले में केन्द्र सरकार की संवेदनहीनता की कड़े शब्दों में निंदा की। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार पूरी तरह दिशाहीन और भ्रमित है। लद्दाख में पिछले दिनों बादल फटने से हुई तबाही से अभी तक वहां की जनता के जख्म हरे है। ऐसे समय जबकि वहां के प्रशासन और राजनैतिक दलों को अपने सारे प्रयास राहत और पुर्नवास के कार्यों में लगाने की आवश्यकता है। जम्मू कश्मीर की हृदयहीन सरकार ने लद्दाख स्वायत्तशासी पर्वतीय परिषद के चुनाव जनता पर थोपकर जनता के साथ बेइन्साफी की है। चुनाव तत्काल स्थगित किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर और लद्दाख क्षेत्र समान व्यवहार के अधिकारी है लेकिन जम्मू और लद्दाख के साथ हमेशा बेइन्साफी की जा रही है इसे भारतीय जनता पार्टी बर्दाश्त नहीं करेगी। लद्दाख में बादल फटने से हजारों परिवार आवासविहीन हो गये है। अक्टूबर से बर्फ गिरना शुरू होगी और उन्हें ठंड में आसमान के नीचे त्रासदी भुगतने के लिये विवश होना पड़ेगा। यह जम्मू कश्मीर सरकार और केन्द्र सरकार की क्षेत्र के प्रति उपेक्षा की भोंडी मिसाल है।

श्री तरूण विजय ने कहा कि केन्द्र सरकार की दिशाहीनता और जम्मू कश्मीर सरकार की निष्क्रियता ने एक ओर सुरक्षा बलों का मनोबल खंडित कर दिया है वहीं केन्द्र सरकार बार–बार जम्मू कश्मीर से सुरक्षा बलों की तैनाती में कटौती करने सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून में संशोधन और उसे समाप्त करने की चर्चा छेड़ रही है। इससे अलगाववादी तत्वों को शह मिल रही है और सुरक्षा बल निरूत्साहित हो गये है। भारतीय जनता पार्टी का मानना है कि वहां परिस्थितियां प्रतिकूल हैं और इस तरह का कोई भी कदम राष्ट्र के लिये घातक होगा।

श्री तरूण विजय ने वह काला दिन याद दिलाया जब 14 सितंबर 1990 को घाटी से जम्मू कश्मीर के असल निवासी कश्मीरी पंडितों को घाटी से निकल जाने का आदेश आतंकवादियों ने दिया था। लाखों परिवार अपना घर बार छोड़कर देश में शरणार्थी बनकर रह गये थे और केन्द्र सरकार और जम्मू कश्मीर सरकार ने उनकी वापसी, सुरक्षा और पुनर्वास के बारे में कोई कारगर पहल नहीं की है। यह समय संकल्प लेने का है कि हम उन्हें घाटी में सकुशल लौटाकर उनके पुनर्वास की माकूल व्यवस्था करेंगे। यह संकल्प राष्ट्रीय भावना के रूप में प्रतिबद्धता की अपेक्षा करता है। श्री विजय ने कहा कि यह पार्टीगत मामला नहीं है। पूरे देश को और सभी राजनैतिक दलों को इस संकल्प में भागीदार बनना होगा।

पूर्वांचल में अलगाववाद सिर उठा रहा है और केन्द्र सरकार तमाशबीन बनकर रह गयी है। श्री तरूण विजय ने कहा कि मणिपुर के हालात काबू से बाहर हो रहे है। वहां मूविया ग्रूप ने पहली बार 66 दिन का बंद रखा। राष्ट्रीय राजमार्ग जाम कर दिये गये। बाद में 15 दिन में यही त्रासदी दोहरायी गयी। यद्यपि राष्ट्रीय राजमार्ग खोल दिये गये है, परंतु भय और आतंक का माहौल इतना गंभीर है कि वहां सामान्य परिस्थितियां बाहाल नहीं हो पायी है। मणिपुर और केन्द्र में कांग्रेस की सरकारें है लेकिन जनता की कोई सुनवाई नहीं हो रही है। जनता आतंक और शोषण के बीच में जी रही है। देशभक्त जनता केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और अलगाववादियों के बीच में दंडित हो रही है।

श्री तरूण विजय ने जम्मू कश्मीर में उमर अब्दुल्ला सरकार को विफल सरकार बताया और कहा कि इससे भी ज्यादा दुखद यह है कि केन्द्र सरकार राष्ट्रीय अखण्डता और आवाम की सुरक्षा के प्रति अपराधिक रूप से लापरवाह है। हमें राष्ट्रीय संकल्प के रूप में जम्मू कश्मीर की अखण्डता के लिये जुटना होगा। जिससे देश की अखण्डता जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाये रखने का हमारा संकल्प पूर्ण हो सके। ■

हमें राष्ट्रीय संकल्प के रूप में जम्मू कश्मीर की अखण्डता के लिये जुटना होगा। जिससे देश की अखण्डता जम्मू कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाये रखने का हमारा संकल्प पूर्ण हो सके।

भाजपा ने कांग्रेस को दी करारी शिकस्त

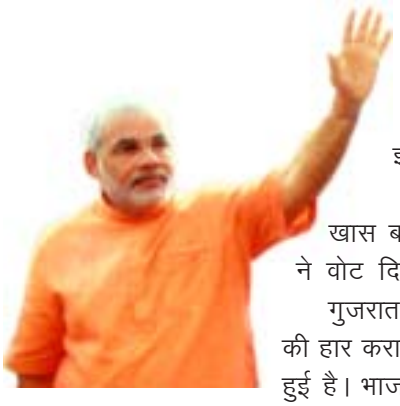

गुजरात में कांग्रेस के अभेद्य गढ़ कठलाल को ढहाते हुए भाजपा ने विधानसभा उपचुनाव जीत लिया। आजादी के बाद इस सीट पर भाजपा की यह पहली जीत है। भाजपा के कानूभाई डाभी ने कांग्रेस के घेलाभाई झाला को 21547 मतों के अंतर से पराजित किया है। विदित हो कि यह सीट कांग्रेस विधायक गौतमभाई झाला के निधन के बाद खाली हुई थी।

13 सितंबर को कठलाल में उपचुनाव हुआ था और 17 सितंबर को घोषित हुआ। खास बात यह है कि उपचुनाव में भाजपा को निर्वाचन क्षेत्र के 65 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट दिए। यह रुझान कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी है।

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने कठलाल उपचुनाव परिणाम को कांग्रेस व सीबीआई की हार करार दिया है। उन्होंने कहा कि कठलाल में कांग्रेस के साथ सीबीआई की भी पराजय हुई है। भाजपा की यह विजय गुजरात की प्रगति में व्यवधान डालने के षड्यंत्रों के खिलाफ जनता का जवाब तथा विकास की राजनीति की जीत है। कांग्रेस विधायक गौतमभाई झाला के निधन के बाद से यह सीट खाली हुई थी।

किसको कितने वोट

कानूभाई डाभी	(भाजपा)	62120
गहलाभाई झाला	(कांग्रेस)	405730
जीत का अंतर		21547

कर्नाटक उपचुनाव में भाजपा की जीत

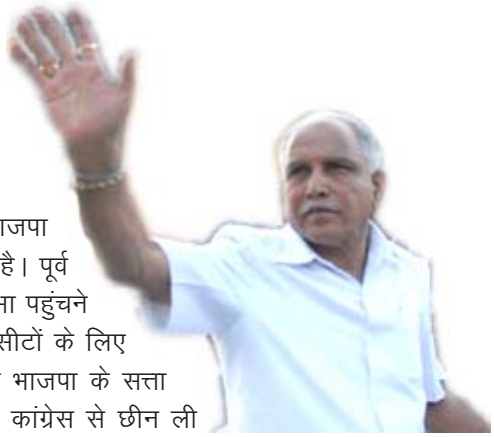

कर्नाटक विधानसभा की दो सीटों के लिए हुए उपचुनाव में भाजपा और जद(एस) ने एक–एक जीतकर कांग्रेस को करारी शिकस्त दी है। पूर्व मुख्यमंत्री धरम सिंह के पुत्र अजय सिंह लगातार दूसरी बार विधानसभा पहुंचने में विफल रहे। कर्नाटक विधानसभा की कादुर और गुलबर्गा दक्षिण सीटों के लिए गत 13 सितम्बर को उपचुनाव हुए थे। कांग्रेस की स्थिति गत वर्ष भाजपा के सत्ता में आने के बाद से लगातार कमजोर हुई है। कादुर सीट भाजपा ने कांग्रेस से छीन ली है। दूसरे नंबर पर जद (एस) रही।

भाजपा के विकासपरक एजेंडे और जन-समर्थक नीतियों की विजय

भाजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 17 सितम्बर, 2010 को प्रेस वक्तव्य जारी कर कहा कि कठलाल के मतदाताओं ने चुनाव में भाजपा पर जो भरोसा दिखाया है, उसके लिए भारतीय जनता पार्टी उनका आभार व्यक्त करती है। एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में भारतीय जनता पार्टी ने गुजरात में कठलाल विधानसभा उप–चुनाव में कांग्रेस के गढ़ को भेदकर विजय प्राप्त की है। भाजपा के श्री कानुभाई दाभी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के श्री गहलाभाई ज़ाला को 21,000 से भी अधिक मतों से पराजित किया।

इस चुनावी परिणाम ने स्पष्ट कर दिया है कि सीबीआई की ताकत का इस्तेमाल करके कांग्रेस पार्टी लोगों को परेशान तो कर सकती है, लेकिन चुनाव नहीं जीत सकती। इस चुनाव परिणाम ने कांग्रेस पार्टी द्वारा अपने राजनीतिक लाभों के लिए सोहराबुद्दीन मामले में सीबीआई के दुरूपयोग के कुप्रयास को उजागर कर दिया है तथा भाजपा के विकासपरक एजेंडे और जन–समर्थक नीतियों में अपने विश्वास की पुष्टि की है। ■

अर्जुन मुंडा तीसरी बार बने झारखंड के मुख्यमंत्री

झारखण्ड में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अर्जुन मुंडा ने 11 सितम्बर को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। उनकी अगुवाई में भाजपा, झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) और ऑल झारखण्ड स्टूडेंटस यूनियन (आजसू) की गठबंधन सरकार बनी।

राजभवन में आयोजित एक समारोह में राज्यपाल एम. ओ. एच. फारूक ने मुंडा को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। मुंडा के साथ आजसू अध्यक्ष सुदेश महतो तथा झामुमो नेता हेमंत सोरेन ने मंत्री पद की शपथ ली।

जमशेदपुर से सांसद मुंडा तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बने हैं। पहली बार वह 18 मार्च 2003 को और दूसरी बार 12 मार्च 2005 को राज्य के मुख्यमंत्री बने थे । 15 नवम्बर 2000 को राज्य के गठन से लेकर अब तक किसी भी मुख्यमंत्री ने अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया है।

शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक, राज्यसभा में पार्टी के उपनेता एस.एस. अहलूवालिया और महासचिव रविशंकर प्रसाद सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे। झामुमो अध्यक्ष शिबू सोरेन भी इस मौके पर मौजूद थे। 82 सदस्यीय राज्य विधानसभा में भाजपा और झामुमो के 18.18, आजसू के 5 और जनता दल (यूनाइटेड) के 2 सदस्य हैं।

अर्जुन मुंडा ने बहुमत साबित किया

झारखण्ड के मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने 14 सितम्बर को ही विश्वास मत हासिल कर लिया। विश्वास मत प्रस्ताव के पक्ष में 45 और विपक्ष में 30 मत पड़े। पांच विधायक अनुपस्थित थे।

विधानसभा भवन में जारी नवीकरण कार्य के चलते राज्य के प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान में बनाई गई अस्थाई विधानसभा में एक दिवसीय विधानसभा सत्र की बैठक हुई। झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के महासचिव व उपमुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विश्वास प्रस्ताव पेश किया।

उल्लेखनीय है कि मुंडा ने गत 11 सितम्बर को राज्य के आठवें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की थी। झारखण्ड विधानसभा में वर्तमान में 80 सदस्य हैं। दो सदस्यों के असामयिक निधन के कारण विधानसभा की संख्या 80 हुई है। राज्य की 82 सदस्यीय विधानसभा में एंग्लो–इंडियन समुदाय के एक सदस्य को मनोनीत किया जाता है। 80 सदस्यीय वर्तमान विधानसभा में भाजपा और झामुमो के 18–18, आजसू के पांच, जद (यु) के दो, कांग्रेस के 13, झारखण्ड विकास मोर्चा (प्रजातांत्रिक) के 11, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के पांच और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माले), मार्क्सवादी समन्वय समिति, झारखण्ड पार्टी (एक्का), झारखण्ड जनाधिकार मंच और आरकेपी के एक–एक सदस्य हैं। तीन सदस्य निर्दलीय हैं। ■

युवाओं के लिए आदर्श हैं मैरी कोम : नितिन गडकरी

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने महिलाओं की विश्व मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय मुक्केबाज एस.सी. मैरी कोम को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि मैरी कोम देश के युवाओं के लिए आदर्श हैं। श्री गडकरी ने 19 सितम्बर 2010 को एक बयान जारी कर कहा, ''मैरी कोम देश के युवाओं के लिए आदर्श हैं। उन्होंने यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करके देश को गौरवान्वित किया है। हम आशा करते हैं कि लंदन ओलम्पिक में वह अपना शानदार खेल जारी रखेंगी।'' विश्व चैम्पियनशिप स्तर की प्रतियोगिता में मैरी कोम का यह पांचवां स्वर्णपदक है। ■

Nitin Gadkari
National President, Bharatiya Janata Party

1 1 SEP 2010

गडकरी की मुंडा को चुनौतियों से जूझने की सलाह

fç; Jh vtqu th]

मैं अपनी ओर से तथा देशभर के भाजपा कार्यकर्ताओं की ओर से आपको एक बार फिर से झारखण्ड के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने पर बधाई देता हूं। मेरी बड़ी हार्दिक इच्छा थी कि मैं आपके शपथ–ग्रहण समारोह में भाग लेता। परन्तु नागपुर में मेरे निवास स्थान पर गणेश चतुर्थी समारोह के कारण राष्ट्रपति शासन की समाप्ति पर पार्टी की सफलता एवं राज्य में लोकप्रिय शासन की स्थापना के अवसर पर मैं अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ शामिल नहीं हो पाया हूं। मैं इस अवसर पर आपको अपनी शुभकमनाएं भेंट करता हूं और कामना करता हूं कि आप हर तरह से सफल हों तथा आपके नेतृत्व में बनी सरकार से झारखण्ड के लोगों को एक सुदृढ़, स्थिर और प्रभावकारी सुशासन प्राप्त हो। आदिवासी समुदाय ने सदा ही भाजपा और इसके सहयोगी दलों में अपना विश्वास व्यक्त किया है और मुझे विश्वास है कि आप उनकी वेदना और आकांक्षाओं का हर प्रकार से ख्याल रखेंगे।

झारखण्ड के लोगों को आपसे बड़ी आशाएं हैं तथा पार्टी की उम्मीद है कि आप हमारी आशाओं पर खरा उतरने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। भाजपा ने सदैव स्व–शासित राज्यों में उत्कृष्ट सुशासन देने के प्रयास पर बल दिया है और मुझे निश्चित विश्वास है कि आपकी सरकार झारखण्ड के लोगों को ''उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं का शासन'' प्रदान करेगी। भाजपा की सुराज अथवा सुशासन की विचारधारा में अन्त्योदय की विचारधारा जन्मजात रूप से निहित है जिसके अन्तर्गत समाज के अपवंचित और असुविधावंचित लोगों तक लाभ पहुंचाने को प्राथमिकता दी जाती है और हमें आशा है कि आपके नेतृत्व में झारखण्ड में बनी भाजपा–नीत सरकार बेहतर प्रदर्शन कर दिखाएगी। यह सुनिश्चित करना होगा कि समाज के निर्धन वर्गों तक विकास के लाभ पहुंचाना तथा नक्सलवादियों के खतरे पर विजय प्राप्त करना– ये दो चुनौतियां झारखण्ड सरकार के सामने खड़ी हैं। मुझे विश्वास है कि पहले की सरकारों में आपके अनुभव और प्रशासनिक दक्षता से इन दोनों चुनौतियों का सामना आप कारगर ढंग से कर लेंगे।

मैं आपकी सफलता के लिए हार्दिक कामना करता हूं।

आपका

(नितिन गडकरी)

श्री अर्जुन मुण्डा
मुख्यमंत्री, झारखण्ड सरकार
रांची

Email : nitingadkari@email.com | www.nitingadkari.org

DELHI : BJP Central Office : 11, Ashoka Road, New Delhi-110001. Tel: 011-2300 5700 Fax: 011-2300 5787.
MUMBAI : 1201-A, 12th Floor, Sukhada Co-Op. Hsg. Soc. Sir Pochkhanwala Marg, Worli, Mumbai 400 030, M. S. (India) Tel : (Telefax) : (022) 2497 0287, 2497 1892
NAGPUR : Gadkari Wada, Upadhye Road, Mahal, Nagpur 440 002, M. S. (India) Tel : (Telefax) : (0712) 272 7127, 272 7145

(भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के अंग्रेजी पत्र का हिन्दी भावानुवाद)

मैं सोनियाजी को चुनौती देती हूं कि वो भी कांग्रेस संगठन में महिला आरक्षण लागू करें : स्मृति ईरानी

भारतीय जनता पार्टी, महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती स्मृति ईरानी कुशल वक्ता एवं प्रभावी व्यक्तित्व के लिए जानी जाती हैं। टीवी सीरियल में भारतीय संस्कृति में ढलीं 'तुलसी' का सुप्रसिद्ध किरदार निभाने वाली श्रीमती ईरानी भाजपा में लंबे समय से सकिय हैं। वे महाराष्ट्र प्रदेश भाजयुमो की उपाध्यक्ष तथा भाजपा की राष्ट्रीय सचिव रह चुकी हैं। नई दिल्ली स्थित भाजपा केन्द्रीय मुख्यालय में श्रीमती स्मृति ईरानी से 'कमल संदेश' संपादक मंडल के सदस्य l;tho dekj flUgk *ने विभिन्न मुद्दों को लेकर विस्तृत बातचीत की। प्रस्तुत है प्रमुख अंश–*

राजनीति में आपका प्रवेश कैसे हुआ?

मेरे नाना जी स्वयंसेवक थे। माताजी जनसंघ की कार्यकर्ता थीं, जो बूथ पर भी जाकर काम करती थीं। इसलिए भाजपा में आना स्वभाविक है। यह कोई अकस्मात् निर्णय नहीं है। परिवारजनों को पहले संगठन में दायित्व नहीं मिला लेकिन वे लोग विचार के प्रति समर्पित रहे। जब मुझे संगठन का दायित्व मिला तो वे खुश हुए। मुझे आगे बढ़ने का मौका मिला। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। इसलिए साधारण कार्यकर्ताओं की क्या उम्मीद होती है, इसका मुझे बखूबी अहसास है।

महिलाओं को घर में अहम जिम्मेदारी निभानी पड़ती है। राजनीति में उसकी भागीदारी कितनी जायज है?

मैं मानती हूं कि महिलाएं और पुरूष राजनीतिक साइकिल के दो पहिए हैं। किसी एक के बिना राजनीति की गाड़ी थम जाएगी। महिलाएं और पुरूष बराबर के हिस्सेदार व पूरक सहयोगी हैं। दोनों के योगदान से ही समाज पुनर्निर्माण का काम पूरा होगा। इसलिए महिलाओं की राजनीति में सहभागिता अपेक्षित है।

हाल ही में आप महिला मोर्चा की अध्यक्ष बनी हैं। आपकी क्या भावी योजनाएं हैं?

पार्टी संविधान के तहत मण्डल, जिला और प्रदेश इकाई कार्यकारिणी में लगभग 100 महिलाएं पद पर आसीन होती हैं। प्रवास के दौरान मैं बहनों से आग्रह करती हूं कि आने वाले चुनावों की तैयारी में प्राणपण से जुट जाएं। बूथ पर पुरूष कार्यकर्ता तो काम करते ही हैं, हम चाहते हैं कि वहां महिला कार्यकर्ताओं की भी नियुक्ति हो। समाज में सम्मान प्राप्त महिलाएं पार्टी से जुड़ें। उनको पार्टी में सम्मानजनक स्थान मिले। प्रवास के दौरान मैं निचले स्तर तक जाने का प्रयास करती हूं। गांव की बहनों से अपील करती हूं कि वो राजनीति में सक्रिय हों। सामाजिक कार्यकर्ताओं से निवेदन करती हूं कि वो समस्याओं के समाधान के लिए आगे आएं। हम ग्रामीण महिला नेतृत्व शिविर लगाने की योजना बना रहे हैं ताकि उनका राजनीतिक प्रशिक्षण सुनिश्चित हो सके। नारी शक्ति केन्द्र का गठन किया जा रहा है। इसके माध्यम से स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार को लेकर अभियान चलाए जाएंगे। हमारा प्रयास है चिकित्सक प्रकोष्ठ, विधि प्रकोष्ठ बहनों को मदद दें। वहीं सेना में महिलाओं के स्थाई कमीशन के लिए हम लोग संघर्ष कर रहे हैं। महिला मोर्चा द्वारा इस विषय को प्रमुखता से उठाया गया। उनकी मांगें काफी समय से लंबित है और वे अपने अधिकारों से वंचित हैं। सरकार ने उनकी एक न सुनी। हम उन्हें निःशुल्क कानूनी सेवा उपलब्ध करा रहे हैं। मैं कहना चाहूंगी कि भाजपा पहली राजनीतिक पार्टी है, जो विपक्ष में रहते हुए भी महिलाओं की समस्याओं का समाधान कर रही है। आज महिलाओं

को भाषण की नहीं, ठोस काम करने की जरूरत है।

महिला मोर्चा अध्यक्ष के नाते अभी तक आपने किन राज्यों का प्रवास किया है?

भाजपा जैसी राजनीतिक पार्टी में प्रवास का बहुत महत्व है। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने कन्याकुमारी से जम्मू और बाघा से दीमापुर तक प्रवास किया है। पंजाब, दिल्ली, गुजरात, तमिलनाडु केरल, पश्चिम बंगाल, जम्मू–कश्मीर, कर्नाटक, अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नगालैण्ड, मिजोरम, मध्य प्रदेश आदि राज्यों का प्रवास कर चुकी हूं। कोशिश है वर्ष के अंत तक या जनवरी माह में अण्डमान–निकोबार सहित सभी राज्यों का प्रवास कर सकूं। गत छह महिने में सघन प्रवास कर राजनीतिक धरातल जानने का मौका मिला। ऐसा करने से हमें कार्यक्रम करने में सहूलियत होगी।

आजकल चारों ओर महिला सशक्तिकरण का शोर सुनाई दे रहा है। आपकी नजर में महिला सशक्तिकरण का क्या मतलब है?

महिला सशक्तिकरण का मतलब है कि महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग हों। उसके पास संविधान द्वारा दिए गए सभी अधिकारों की जानकारी हो। जो अपने निजी और प्रोफेशनल जीवन के निर्णय खुद ले सकती हैं। वे देश और समाज के लिए स्वयं को समर्पित कर सकती हैं।

राज्यसभा में महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के बावजूद यह अधर में लटका है। क्या लोकसभा में इसे पारित करने के लिए सरकार सचमुच गंभीर है?

महिला आरक्षण मुद्दे पर कांग्रेस की असलियत उजागर हो गई है। उनके लिए यह सिर्फ राजनीतिक नारा है। वे महिलाओं को झांसा दे रहे हैं। जबकि भारतीय जनता पार्टी महिला आरक्षण को लेकर प्रतिबद्ध है। अपने पार्टी संविधान में बदलाव करके हमने अपने इरादे जाहिर कर दिए हैं। भाजपा पहली और अकेली पार्टी है जिसने अपने संगठन के भीतर सभी स्तरों पर महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय लिया है। मैं कांग्रेस को चुनौती देती हूं कि वो भी अपने संगठन में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करें।

आज भी समाज में महिलाओं के साथ सामाजिक अन्याय और अत्याचार की घटनाएं होती रहती हैं। इसे रोकने के लिए आपकी क्या योजनाएं हैं?

महिलाएं अपने संवैधानिक अधिकारों को पहचानें, इसलिए नारी शक्ति केन्द्र का गठन किया गया है। महिलाएं शोषण के विरूद्ध आवाज उठाएं। एफआईआर दर्ज कराएं। विषय का फॉलोअप करें। जिनके पास पैसा न हो उन्हें हम निःशुल्क कानूनी सेवा उपलब्ध कराएंगे। उनके संवैधानिक अधिकारों से उन्हें अवगत कराने का काम करेंगे। महिलाएं अबला नहीं हैं। वे अपने पैरों पर खड़ी हों। सूचना से सशक्त बनें और अपने रास्ते खुद तय करें।

आजकल चिंता व्यक्त की जा रही है कि भारतीय महिलाएं पाश्चात्य संस्कृति का तेजी से अनुकरण कर रही हैं। इसे आप किस रूप में देखती हैं?

मैं मानती हूं कि पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में भारतीय संस्कार और सभ्यता पीछे छूटती जा रही है। कुछ ही महिलाएं पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर रही हैं, जो गलत है। लेकिन देखिए, भारतीय महिला बाजार से चीन निर्मित सामान खरीदती जरूर हैं लेकिन वह लक्ष्मी पूजा भी जरूर करती हैं। भारतीय संस्कृति व परंपरा की रक्षा के लिए स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करना होगा, तभी परिवार संस्कारित हो सकेंगे।

भ्रूण हत्या हमारे समाज की प्रमुख समस्या बन गई है। क्या कहेंगी आप?

हमें राजनीतिक मुद्दे के साथ–साथ सामाजिक मुद्दों को भी उठाना चाहिए। राजनीतिक दल गम्भीर हों तो सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर समाज में सहज जागरूकता पैदा हो सकती है। पहले बेटी को जन्मने से पहले ही मार दिया जाता था लेकिन सामाजिक प्रयासों से अब लोग इसके खिलाफ हो रहे हैं। भ्रूणहत्या रोकने को लेकर भाजपा ने गंभीरता से कार्य किया। भ्रूणहत्या के विरोध में गुजरात में सामाजिक कार्यक्रम चलाया गया। यह सुनिश्चित किया गया कि भ्रूणहत्या करने वालों को जेल होगी। मध्यप्रदेश में लाडली लक्ष्मी योजना के माध्यम से बेटियों की शिक्षा और शादी के लिए अभिनव प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे प्रयासों से महिला कार्यकर्ताओं का सिर गर्व से ऊंचा हुआ। मेरा मानना है राजनीतिक और सामाजिक दायित्वों के बीच संतुलन बनाकर चलें तो सच्चे मायने में देश व समाज सशक्त होंगे।

आप अभिनय के क्षेत्र की मशहूर हस्ती थीं, फिर राजनीति में क्यों आईं?

इसमें कोई दो मत नहीं कि राजनीति परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। परिवार में ही मुझे विचारधारा की शिक्षा मिली। सामाजिक जिम्मेदारी निभाने की शिक्षा मिली। अभिनय के क्षेत्र में भी हमने समाजहित को ही सामने रखा। मेरा मानना है कि भारतीय जीवन–मूल्यों व

संस्कारों के साथ स्वयं का जीवन परिपूर्ण होना चाहिए।

राजनीति में आपके आदर्श कौन हैं?

राजनीति में अटलजी हमारे रोल मॉडल हैं। संगठन और जनता पर उनकी जबरदस्त पकड़ रही। वे वर्ल्डक्लास स्टेट्समैन साबित हुए। वे किसी राजनीतिक परिवार का हिस्सा नहीं है बल्कि आम परिवार से आकर मेहनत के दम पर उन्होंने अपनी जगह बनाई। इनके अलावा लालकृष्ण आडवाणजी हमारे मार्गदर्शक हैं। मैं सुषमाजी एवं अरुण जेटली जी से भी प्रेरणा लेती हूं। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरीजी, जिनके नेतृत्व में हम लोग काम कर रहे हैं, उनसे भी सीख लेती रहती हूं। इसके साथ ही मेरी प्रेरणा की स्रोत है पार्टी की असंख्य कार्यकत्रियां हैं, जो संगठन कार्य के लिए जीवन समर्पित कर रही हैं।

कहा जाता है कि हर सफल पुरुष के पीछे महिला का हाथ होता है। क्या एक सफल महिला के मामले में कुछ ऐसा ही है?

मेरे पीछे नानाजी का आर्शीवाद व मार्गदर्शन रहा है। देश व समाज को देखने की समझ नानाजी की वजह से विकसित हुई। सात साल की उम्र से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा के बारे में जानने लगी। संघ एक सामाजिक संगठन है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय पुनर्निर्माण है। इसमें सभी अपने हिसाब से रचनात्मक सहयोग करते हैं।

किसी ने कहा है-

'कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता
कहीं जमीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।'

लेकिन मुझे मुकम्मल जहां मिला और जमीं भी मिली। मैं ऊंची उड़ान भरती रही लेकिन सदैव जमीन से जुड़ी रही। देश मजबूत बने, समाज सशक्त हो, इसी सपने के साथ काम करती हूं और परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि इस काम में मेरे पैर कभी न डगमगाये। ■

प्रकोष्ठों की प्रथम बैठक

सब के कार्य का ऑडिट होगा : नितिन गडकरी

gekj: lEoknnkrk }kjk

गत 21 सितम्बर 2010 को दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी के सभी प्रकोष्ठों के नव–नियुक्त राष्ट्रीय संयोजकों व सह–संयोजकों की प्रथम बैठक पार्टी के केन्द्रिय कार्यालय अशोक रोड में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के उदघाटन भाषण से प्रारम्भ हुई। श्री गडकरी ने कहा कि प्रकोष्ठों का गठन पार्टी को और अधिक व्यापक व सर्पस्पर्शी बनाने की दृष्टि से किया गया है। यह पद नहीं उत्तरदायित्व है और सब को अपने दायित्व के प्रति समर्पित भाव से कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि सभी प्रकोष्ठों के काम का प्रति मास मूल्यांकन होगा और हर तीन मास में समीक्षा बैठक की जायेगी। उन्होंने कहा कि हर अधिकारी के कार्य निष्पादन का ऑडिट होगा। श्री गडकरी ने कहा कि पार्टी को 2014 के चुनाव तक अपना मत प्रतिशत 10 प्रतिशत बढ़ाना है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वह आज ही से इस संकल्प की प्राप्ति के लिये कमर कस लें। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास दस लाख हार्सपावर का बल है पर क्रियाशील अभी केवल एक लाख हार्सपावर ही है। हमें अपनी क्रियाशीलता बढ़ानी होगी। उन्होंने कहा कि यदि 25 प्रतिशत बल भी सक्रिय हो जाये तो भाजपा सत्ता प्राप्त कर लेगी।

इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता श्री बाळ आपटे सांसद, राष्ट्रीय महामन्त्री संगठन श्री राम लाल, राष्ट्रीय महासचिव श्री जगत प्रकाश नडडा, भाजपा मुख्यालय प्रभारी श्री श्याम जाजू तथा मोर्चों व प्रकोष्ठों के राष्ट्रीय समन्वयक श्री महेंन्द्र कुमार पाण्डे उपस्थित थे। श्री पाण्डे ने सारे कार्यक्रम का संचालन किया और ई–प्रस्तुति द्वारा प्रकोष्ठों की संरचना, महत्व और उन से पार्टी की अपेक्षाओं को उजागर किया।

दूसरे सत्र में सभी प्रकोष्ठों के कार्यकलाप और भावी कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। बाद में प्रकोष्ठों को तीन वर्गों में बांट कर उनके बारे विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में मुख्यालय प्रभारी श्री श्याम जाजू ने भी अपने विचार रखे।

बैठक के समापन सत्र की अध्यक्षता संगठन महामन्त्री श्री राम लाल ने की। उन्होंने प्रकोष्ठों के गठन और पार्टी को उनसे अपेक्षाओं से अवगत कराया। अपने सम्बोधन में उन्होंने बताया कि इस समय 33 प्रकोष्ठ हैं और कुछ और का गठन अभी बाकी है। उन्होंने बताया कि प्रकोष्ठों में पद नहीं कार्य करने का अवसर प्रदान किया गया है। आपको अपने कार्य से सन्तोष आयेगा, आनन्द आयेगा। उन्होंने काम करने में मानसिक तैयारी और सकारात्म सोच पर बल दिया। ■

जीवन का ध्येय

–दीनदयाल उपाध्याय

विश्व का प्रत्येक प्राणी सतत् इस बात का प्रयत्न करता रहता है कि उसका अस्तित्व बना रहे, वह जीवित रहे। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए वह दूसरे अनेक प्राणियों को अस्तित्वहीन करने का प्रयत्न करता रहता है तथा स्वयं उसको अस्तित्वहीन करनेवाली शक्तियों से निरंतर अपनी रक्षा करता रहता है। विनाश और रक्षा के इन प्रयत्नों की समष्टि का ही नाम जीवन है। इन प्रयत्नों की भिन्नता ही भिन्न–भिन्न प्रकार के जीवनों का कारण है तथा इनकी सफलता या असफलता ही विभिन्न प्राणियों के विकास या विकार का मापदंड है। मानव भी इस नियम का अपवाद नहीं है। आदि मानव की सृष्टि और तब से अब तक का इतिहास इन प्रयत्नों का ही इतिहास है। किंतु मनुष्य विश्व के प्राणियों से अधिक विकसित है उसका अस्तित्व केवल प्राथमिक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर ही निभर नहीं करता किंतु उसके जीवन में भौतिकता के साथ–साथ आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक तत्त्वों का भी समावेश होता है। मनुष्य के जीवन का ध्येय श्वासोच्छवास तथा श्वासोच्छवास की क्रिया को बनाए रखना ही नहीं है, किंतु इससे भिन्न है। वह तो श्वासोच्छवास मात्र जीवन को साधन मानता है, साध्य नहीं। उसका साध्य तो उपनिषदों के शब्दों में है–

'आत्मा वा रे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निर्दिध्यासितव्यः।'

वह आत्मा की अनुभूति करना चाहता है, उसे समझना चाहता हैय अपनी संपूर्ण क्रियाओं को उस अनुभूति के प्रति लगाता है।

हमारी प्रेरक शक्ति

यह आत्मा क्या है जिसके लिए मानव इतना तड़पता है? इस संबंध में अनेक मतभेद हैं और इन्हीं मतभेदों के कारण विश्व में अनेक संप्रदायों की सृष्टि हुई है। अनेक मनीषियों ने इस आत्मा को विश्व का आदि कारण, उसका कर्ता, धर्ता एवं हर्ता, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी परब्रह्म परमेश्वर को ही माना है। उनका कथन है कि वही एकमेव शक्ति है। जो संपूर्ण विश्व को चला रही है तथा प्रत्येक प्राणी उस ओर ही बढ़ने का प्रयत्न कर रहा है, वह उसी में मिल जाना चाहता है और इसलिए मानव का प्रयत्न उस परब्रह्म का साक्षात्कार ही है। उस परब्रह्म में ही पूर्णता होने के कारण 'सत्यं शिवं और सुन्दरं' की पूर्णाभिव्यक्ति होने के कारण ही मनुष्य इन गुणों की ओर आकर्षित होता है तथा जीवन के हर क्षेत्र में इन गुणों की आंशिक अनुभूति करता हुआ पूर्ण साक्षात्कार के लिए प्रयत्नशील रहता है। कुछ विद्वान् इस अदृश्य शक्ति में विश्वास न करते हुए केवल हृदय जगत् में ही विश्वास रखते हैं तथा उसमें भी मानव के विकास को (उसके सुख–साधन–संपन्न जीवन को) ही परम लक्ष्य मानकर सुख की प्राप्ति के प्रयत्नों को ही मानव जीवन का एकमेव कर्तव्य समझते हैं। उनके विचारों में ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है अपितु यदि गहराई से देखा जाए तो ज्ञात होगा कि मानव को एकता की अनुभूति तथा उसको सुखमय बनाने की इच्छा को प्रेरकशक्ति निश्चित ही दृश्य सृष्टि से भिन्न कोई सूक्ष्म तत्त्व है जो इस दृश्य जगत् को परिव्याप्त किए हुए प्रत्येक प्राणी के अंतःकरण में संपूर्णता को, एकात्मता की भावना उत्पन्न करता है। उस शक्ति को आप चाहे जो नाम दें किंतु यह निश्चित है कि उसकी ओर प्रत्येक मानव अग्रसर है तथा मानवता के कल्याण की भावना किसी स्वार्थ का परिणाम नहीं किंतु आत्मानुभूति की इच्छा का परिणाम है। अज्ञानवश मानव आत्मा के स्वरूप को संकुचित करने का प्रयत्न करता है किंतु सत्य का ज्ञान सतत् अज्ञान पटल को भेदने के लिए प्रयत्नशील होता है।

अपनी प्रतिमा का विकास

संपूर्ण सृष्टि को एकात्मता के साक्षात्कार का ध्येय सम्मुख रखते हुए भी मानव अपनी प्रकृति के अनुसार ही उसकी ओर अग्रसर होता है। उसी प्रकार संसार के भिन्न–भिन्न भागों में रहनेवाला मानव भी संपूर्ण मानव को आंतरिक एकता की भावना रखते हुए तथा उसकी पूर्णानुभूति की इच्छा रखते हुए भी प्रकृति की साधनों एवं उनको अपने नियंत्रण में करके आगे बढ़ने के प्रयत्नों में अपनी एक विशिष्ट दिशा निश्चित कर लेता है, उसकी कुछ विशेषताएँ हो जाती हैं, उसको अपनी निजी प्रतिभा का विकास हो जाता है। यद्यपि संपूर्ण पृथ्वी एक है किंतु उसके ऊपर स्थित पहाड़, पर्वत, सागर और वन उसके भिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की जलवायु और वनस्पति अपना प्रभाव उस प्रदेश के मानव पर डाले बिना नहीं रहते तथा उस विशिष्ट भू–भाग के मनुष्य पूर्णानुभूति के प्रयत्नों में अपना विकास निश्चित दिशा में करते हैं। उनका अपना एक निजी स्वत्व हो जाता है जो कि उसी प्रकार की दूसरी इकाइयों से उसी प्रकार भिन्न होता है जैसेकि एक ही सेना के विभिन्न अंग।

आधुनिक युद्ध में जल, थल और वायु सेना जिस प्रकार अपनी–अपनी पद्धति से एक ही युद्ध को जीतने का प्रयत्न करती हैं उसी प्रकार संसार के भिन्न–भिन्न राष्ट्र एक ही मानवता की अनुभूति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। जल, थल और वायु सेना में कार्य करने में सैनिकों को अपनी विशेष प्रतिभा का विकास होता है तथा वे अपनी निजी पद्धति से शत्रु को पराजित करने का प्रयत्न करते रहते हैं। तीनों सेनाओं में सामंजस्य रहना तो अच्छा है किंतु यदि किसी सेना के सैनिक अपनी पद्धति को ही सत्य मानकर दूसरी सेना के सैनिकों पर प्रभाव जमाने का प्रयत्न करें अथवा उसकी प्रतिभा को नष्ट करना चाहें तो उनका यह प्रयत्न अंतिम ध्येय की पूर्ति में बाधक होगा तथा आक्रमित सेना के सैनिकों का कर्तव्य होगा कि वे आक्रमणकारी सैनिकों से ही प्रथम युद्ध करके उनकी बुद्धि को ठिकाने पर ला दें। इसी प्रकार यदि किसी सेना के विशेष प्रभाव को देखकर अथवा किसी विशेष क्षेत्र में उनकी विजयों को देखकर अथवा आक्रमणकारी सेना की सामर्थ्य का अनुभव करते हुए कोई सेना अपनी पद्धति, अपने प्रयत्न तथा अपनी प्रतिभा को तिलांजलि देकर उस दूसरी सेना की विशेषताओं को और उसमें भी विशेषकर उसके बाह्य स्वरूप को अपनाने का प्रयत्न करती है तो वह तो स्वतः नष्ट हो ही जाएगी अपितु मानव की अंतिम विजय में भी अपना दायित्व नहीं निभा पाएगी।

आक्रमण वृत्ति

विश्व के अनेक राष्ट्रों का इतिहास उपर्युक्त उदाहरण की भावनाएँ ही परिलक्षित करता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी विशिष्ट पद्धति को सत्य समझने लगता है तथा अपने को ही एकमेव प्रतिभावान् मानकर दूसरे राष्ट्रों पर अपनी पद्धतियों को लादने का प्रयत्न करता है। यदि यह प्रयत्न शांतिमय होता तो भी कुछ बात नहीं किंतु वह जबरदस्ती अपने सत्य को दूसरों के गले उतारना चाहता है। मानव के सुख और वैभव को भी वह अपने राष्ट्र के सुख और वैभव तक ही सीमित करके दूसरे राष्ट्रों के सुख और शांति को नष्ट करता है। उसके प्राकृतिक विकास में बाधा डालता है। फलतः एक राष्ट्र दूसरे पर विजय प्राप्त कर लेता है और उसे गुलाम बना लेता है। परतंत्र राष्ट्र का जीवन प्रवाह रुद्ध हो जाता है। उसके घटक किसी–न–किसी प्रकार श्वासोच्छवास तो करते रहते हैं किंतु वे अपने जीवन में सुख और शांति का अनुभव नहीं कर पाते। भौतिक दृष्टि से सुखोपभोग करनेवाले व्यक्ति भी परतंत्रता का ताप अनुभव करते रहते हैं क्योंकि उनका आत्मसम्मान नष्ट हो जाता है, उनकी भावनाओं पर ठेस पहुँचती है तथा उनकी प्रतिभा कुंठित होने लगती है, उनकी आत्मानुभूति का मार्ग बंद हो जाता है। युगयुगों से उनकी प्रतिभा ने प्रस्फुटित होकर जिन विशेष वस्तुओं का निर्माण किया होता है, उसकी अवमानना होने लगती है तथा उनके विनाश का पथ प्रशस्त हो जाता है। उस राष्ट्र की भाषा, संस्कृति, साहित्य और परंपरा नष्ट होने लगती है, उसके महापुरुषों के प्रति अश्रद्धा निर्माण की जाती है तथा उसके नैतिक मापदंडों को निम्नतर ठहराया जाता है। उसके जीवन की पद्धतियाँ विदेशी पद्धतियों से आक्रांत हो जाती हैं तथा विदेशी आदर्श उसके अपने आदर्शों कर्ा स्थान ले लेते हैं। फलतः उस राष्ट्र के व्यक्तियों की दशा विक्षिप्त व्यक्ति के समान हो जाती है। अपनी प्रकृति, स्वभाव और प्रतिभा के अनुसार कार्य करने की सुविधा न रहने के कारण वे प्रगति के पथ पर अग्रसर होने से ही वंचित नहीं रह जाते अपितु पतन की ओर भी अग्रसर हो जाते हैं।

हमारी स्वतंत्रता

ऐसी दशा में उस राष्ट्र के घटकों का प्रथम कर्तव्य हो जाता है कि विजेता राष्ट्र के प्रभुत्व को नष्ट करके अपने राष्ट्र को स्वतंत्र किया जाए। उस राष्ट्र की संपूर्ण शक्ति विदेशी राष्ट्र के प्रति विद्रोह की भावना लेकर खड़ी हो जाती है और अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार अवसर प्राप्त होने पर स्वतंत्रता को प्राप्त करती है। विश्व के इस नियम के अनुसार भारतवर्ष ने भी अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध बगावत का झंडा खड़ा किया और अंत में एक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर ही ली।

15 अगस्त, 1947 को हमने एक मोरचा जीत लिया। हमारे देश से अंग्रेजी राज्य विदा हो गया। उस राज्य के कारण हमारी प्रतिभा के विकास में जो बाधाएँ उपस्थित की जा रही थीं, उनका कारण हट गया, हम अपना विकास करने के लिए स्वतंत्र हो गए। अपनी आत्मानुभूति का मार्ग खुल गया। किंतु अभी भी मानव की प्रगति में हमको सहायता करनी है। मानव द्वारा छेड़े गए युद्ध में जिन–जिन शस्त्रास्त्रों का प्रयोग हमने अब तक किया है, जिनके चलाने में हम निपुण हैं तथा जिन पर पिछली सहस्राब्दियों में जंग लग गई थी उन्हें पुनः तीक्ष्ण करना है तथा अपने युद्ध कौशल का परिचय देकर मानव को विजय बनाना है। आज यदि हमारे मन में उन पद्धतियों के विषय में ही मोह पैदा हो जाए, जिनके पुरस्कर्ताओं से हम अब तक लड़ते रहे हैं तो यही कहना होगा कि हम न तो स्वतंत्रता का सच्चा स्वरूप समझ पाए हैं और न अपने जीवन के ध्येय को ही पहचान पाए हैं। हमारी आत्मा ने अंग्रेजी राज्य के प्रति विद्रोह केवल इसलिए नहीं किया कि दिल्ली में बैठकर राज्य करनेवाला एक अंग्रेज था, अपितु इसलिए भी कि हमारे दिन–प्रतिदिन के जीवन में हमारे जीवन की गति में विदेशी पद्धतियाँ और रीति–रिवाज विदेशी दृष्टिकोण और आदर्श अडंगा लगा रहे

थे, हमारे संपूर्ण वातावरण को दूषित कर रहे थे, हमारे लिए साँस लेना भी दूभर हो गया था। आज यदि दिल्ली का शासनकर्ता अंग्रेज के स्थान पर हममें से ही एक, हमारे ही रक्त और माँस का एक अंश हो गया है तो हमको इसका हर्ष है, संतोष है, किंतु हम चाहते हैं कि उनकी भावनाएँ और कामनाएँ भी हमारी भावनाएँ और कामनाएँ हों। जिस देश की मिट्टी से उसका शरीर बना है, उसके प्रत्येक रंजकण का इतिहास उसके शरीर के कण–कण से प्रति ध्वनित होना चाहिए, तीस कोटि के हृदयों को समष्टिगत भावनाओं से उसका हृदय उद्वेलित होना चाहिए तथा उनके जीवन के विकासक अनुकूल, उनकी प्रकृति और स्वभाव अनुसार तथा उनकी भावनाओं और कामनाओं के अनुरूप पद्धतियों की सृष्टि उसके द्वारा होनी चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो हमको कहना होगा कि अभी भी स्वतंत्रता की लड़ाई बाकी है। अभी हम अपनी आत्मानुभूति में आनेवाली बाधाओं को दूर नहीं कर पाए हैं

सब प्रकार स्वतंत्र हों

अंग्रेजी राज्य के चले जाने के बाद आवश्यक है कि हमारा देश आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में भी स्वतंत्रता का अनुभव करें। जब तक भारतवर्ष आर्थिक दृष्टि से परमुखापेक्षी है तथा भारत को तीस कोटि संतान की आर्थिक उन्नति का समान अवसर प्राप्त नहीं है, जब तक उनकी उन्नति के द्वार खुले नहीं हैं तथा उसके साधन प्रस्तुत नहीं हैं, तब तक भारतवर्ष विश्व की प्रगति में कदापि सहायक नहीं हो सकता। न तो वह जीवन के सत्य का साक्षात्कार कर सकेगा और न मानव की स्वतंत्रता का ही।

आर्थिक स्वाधीनता के साथ–साथ सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता है। आत्मानुभूति के प्रयत्नों में जिन सामाजिक व्यवस्थाओं एवं पद्धतियों की राष्ट्र अपनी सहायता के लिए सृष्टि करता है अथवा जिन रीति–रिवाजों में उसकी आत्मा की अभिव्यक्ति होती है, वे ही यदि कालावपात से उसके मार्ग में बाधक होकर उसके ऊपर भार रूप हो जाएँ तो उनसे मुक्ति पाना भी प्रत्येक राष्ट्र के लिए आवश्यक है। यात्रा की एक मंजिल में जो साधन उपयोगी सिद्ध हुए हैं वे दूसरी मंजिल में भी उपयोगी सिद्ध होंगे यह आवश्यक नहीं। साधन तो प्रत्येक मंजिल के अनुरूप ही चाहिए तथा इस प्रकार प्रयाण करते हुए प्राचीन साधनों का मोह परतंत्रता का ही कारण हो सकता है क्योंकि स्वतंत्रता केवल उन तंत्रों का समष्टिगत नाम है जो स्वानुभूति में सहायक होते हैं।

सांस्कृतिक स्वतंत्रता

राष्ट्र की सांस्कृतिक स्वतंत्रता तो अत्यंत महत्त्व की है, क्योंकि संस्कृति ही राष्ट्र के संपूर्ण शरीर में प्राणों के समान संचार करती है। प्रकृति के तत्त्वों पर विलय पाने के प्रयत्न में तथा मानवानुभूति की कल्पना में मानव जिस जीवन दृष्टि की रचना करता है वह उसकी संस्कृति है। संस्कृति कभी गतिहीन नहीं होती अपितु वह निरंतर गतिशील फिर भी उसका अपना एक अस्तित्व है नदी के प्रवाह की भाँति निरंतर गतिशील होते हुए भी वह अपनी निजी विशेषताएँ रखती हैं जो उस सांस्कृतिक दृष्टिकोण को उत्पन्न करनेवाले समाज के संस्कारों में तथा उस सांस्कृतिक भावना से जन्य राष्ट्र के साहित्य, कला, दर्शन, स्मृति शास्त्र, समाज रचना इतिहास एवं सभ्यता के विभिन्न अंग अंगों में व्यक्त होती हैं। परतंत्रता के काल में इन सब पर प्रभाव पड़ जाता है तथा स्वाभाविक प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है। आज स्वतंत्र होने पर आवश्यक है कि हमारे प्रवाह की संपूर्ण बाधाएँ दूर हों तथा हम अपनी प्रतिभा अनुरूप राष्ट्र के संपूर्ण क्षेत्रों में विकास कर सकें। राष्ट्र भक्ति की भावना को निर्माण करने और उसको साकार स्वरूप देने का श्रेय भी राष्ट्र की संस्कृति को ही है तथा वही राष्ट्र की संकुचित सीमाओं को तोड़कर मानव की एकात्मता का अनुभव कराती है। अतः संस्कृति की स्वतंत्रता परमावश्यक है। बिना उसके राष्ट्र की स्वतंत्रता निरर्थक ही नहीं, टिकाऊ भी नहीं रह सकेगी।

स्वार्थ का साधन नहीं

आज अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता का उत्सव मनाते समय हम स्वतंत्रता के इन मूल्यों को समझें। स्वतंत्रता की कुछ व्यक्ति समूह के स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाना, फिर वह व्यक्ति समूह तीस करोड़ का ही क्यों न हो, स्वतंत्रता को उसके महान् आसन से गिराकर धूल में मिलाना होगा। इस प्रकार के दृष्टिकोण से कार्य करने पर न तो स्वतंत्रता को हम अनुभूति ही कर पाएँगे और न हम विश्व को ही कुछ सेवा कर पाएँगे।

अपितु इस प्रकार का स्वार्थी और अहंकारी भाव लेकर कार्य करने पर हम उसी इतिहास की पुनरावृत्ति करेंगे जो कि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर प्रभाव जमाने में निर्माण करता है। यहाँ पात्र भिन्न होंगे, वे एक ही राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर प्रभाव जमाने में निर्माण करता है। यहाँ पात्र भिन्न होंगे, वे एक ही राष्ट्र के घटक होंगे, पास–पास रहनेवाले पड़ोसी होंगे और इसलिए उनके कृत्य और भी भयंकर हो जाते हैं तथा उसका परिणाम भी सर्वव्यापी विनाश हो सकता है। किंतु हमारा विश्वास है कि राष्ट्र की जीवनदायिनी शक्ति अपने सच्चे स्वरूप और कार्य को समझेगी तथा विनाश के स्थान पर विकास के मार्ग पर अग्रसर होती हुई भारत की तीस कोटि संतान अपने परम लक्ष्य परब्रह्म की प्राप्ति तथा विश्वात्मा की अनुभूति कराएगी। ■

(सौजन्य : पांचजन्य,
भाद्रपद कृष्ण 9, वि.सं. 2006)

कांग्रेस सरकार ने भ्रष्टाचार के सारे रिकार्ड तोड़ दिये हैं – वेंकैया नायडू

भाजपा दिल्ली प्रदेश कार्यसमिति बैठक के दौरान प्रदेश प्रभारी श्री वेंकैया नायडू, प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता एवं राष्ट्रीय सचिव सुश्री आरती मेहरा साथ में मंचासीन हैं – पूर्व प्रदेश भाजपा अध्यक्षगण सर्वश्री डा. हर्षवर्धन, प्रो. ओम प्रकाश कोहली, मदनलाल खुराना एवं मांगेराम गर्ग।

HKK जपा के प्रदेश प्रभारी श्री एम. वेंकैया नायडू ने कहा है कि केन्द्र और दिल्ली की कांग्रेस सरकारों की शुरू से ही यह नीति रही है कि बात करो गरीबों की और पोषण करो अमीरों की। यही कारण है कि दोनों सरकारों ने भ्रष्टाचार के सारे रिकार्ड तोड़ दिये हैं। दिल्ली में लघु भारत बसता है परन्तु यहां के लोगों को 12 वर्ष के कांग्रेसी शासन में मूलभूत सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं हैं। सरकारी गोदामों में अनाज सड़ रहा है और देश के करोड़ों लोग भूखे पेट सो रहे हैं। उन्होंने दिल्ली प्रदेश भाजपा के लगातार जनांदोलनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अन्य राज्यों को दिल्ली से सीख लेनी चाहिए।

श्री नायडू 16 सितम्बर को कांस्टीट्यूशन क्लब स्थित डिप्टी स्पीकर हॉल में प्रदेश कार्यकारिणी, प्रदेश पदाधिकारियों, मोर्चो के पदाधिकारियों, जिला अध्यक्षों आदि की अतिमहत्वपूर्ण बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता श्री मेवाराम आर्य ने एक राजनैतिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इसका अनुमोदन प्रदेश उपाध्यक्षा विशाखा शैलानी ने किया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित घोषित किया गया। कार्यकारिणी में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को बर्खास्त करने की मांग राष्ट्रपति महोदया से की।

प्रदेश प्रभारी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि स्वयं को आम आदमी और गरीब आदमी की हितैषी बताने वाली प्रदेश कांग्रेस सरकार राशन की दुकानों से बीपीएल और एपीएल कार्ड धारकों को प्रतिमास सिर्फ 19 किलो गेहूँ और 4.5 किलो चावल देती है। यहां की 1639 अनाधिकृत कालोनियों में 55 लाख लोग नारकीय जीवन गुजार रहे हैं। इन्हें पीने का पानी, लगातार बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवहन आदि की सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। सरकार ने 10 लाख मकान बनाकर गरीबों को देने का वायदा किया था। यह वायदा पूरा नहीं हुआ। राष्ट्रमंडल खेलों के नाम पर जिस तरह अरबों रूपए का भ्रष्टाचार किया गया है उसकी मिसाल अन्यत्र मिलना मुश्किल है। शीला सरकार ने अनुसूचित जाति कल्याण फंड का 680 करोड़ रूपया खेलों के नाम पर लुटा डाला और विधानसभा तक को इस बारे में गुमराह किया।

खेलों के नाम पर दिल्ली में आये दिन जाम लगते हैं और दुर्घटनाएं होती हैं। सरकार को दिल्लीवासियों की कोई चिन्ता नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने की। उन्होंने कहा कि प्रश्न राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय इज्जत का है इसलिए भाजपा खेलों में हो रहे भ्रष्टाचार और अन्य गड़बड़ियों का मामला खेलों के समाप्त होने के

बाद उठाएगी। उन्होंने कहा कि खेलों के कारण सम्पूर्ण दिल्ली को गड्ढामय कर दिया गया है। इन गड्ढों में पानी भरने से डेंगू आदि मारक बीमारियां फैल रही हैं। खेलों में जितने भी भ्रष्टाचार किये गये हैं उन सबका हिसाब दिल्ली भाजपा लेकर रहेगी। कांग्रेसी भ्रष्टाचारियों को भाजपा जेल भिजवायेगी। दिल्ली में दो बार आई भीषण बाढ़ का जिक्र करते हुऐ उन्होंने बताया कि उन्होंने स्वयं भाजपा टीम के साथ बाढ़ पीड़ित इलाकों का दौरा किया था।

लोग पानी और शौच तक की सुविधाओं के लिए तरस रहे थे। भाजपा कार्यकर्ताओं ने बाढ़ पीड़ितों की हर संभव सहायता की। सरकारी अमला सोता रहा। दिल्ली अपराधियों और अराजक तत्वों का गढ़ बन गई है। खेलों पर भी आतंकवाद का साया मंडरा रहा है।

श्री गुप्ता ने कहा अफजल गुरू को कांग्रेस जानबूझ कर फांसी नहीं चढ़ा रही है इसका कुपरिणाम कश्मीर और नक्सल प्रभावित इलाकों में देखने को मिल रहा है। सरकार असहाय है। आतंकी खुलेआम अपहरण, हत्या, रेल दुर्घटनाएं और सरकारी इमारतों को आग लगा रहे हैं।

बैठक में राष्ट्रीय मंत्री आरती मेहरा, वाणी त्रिपाठी दिल्ली के पूर्व अध्यक्षगण सर्वश्री डॉ. हर्ष वर्धन, प्रो. ओम प्रकाश कोहली, मांगे राम गर्ग और पूर्व मुख्यमंत्री मदन लाल खुराना ने हिस्सा लिया। प्रदेश उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता श्री विजय जौली ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर प्रदेश प्रभारी और प्रदेश कार्यकारिणी से मांग की कि दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता को चुनाव और अनुशासन समितियां बनाने का अधिकार दिया जाये। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित घोषित किया गया। ■

भाजपा ने मानवाधिकार आयोग के सामने सड़े अनाज के दो दर्जन नमूने पेश किए

गत 15 सितम्बर को भारतीय जनता पार्टी ने एफसीआई के विभिन्न गोदामों से सड़े हुए अनाज के दो दर्जन नमूने इकट्ठे कर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सामने पेश किए। यह नमूने भाजपा राष्ट्रीय सचिव डॉ. किरीट सोमैय्या द्वारा याचिका के समर्थन में पेश किए गए जिसे आयोग पहले ही स्वीकार कर चुका है।

भाजपा ने आरोप लगाया कि भारत सरकार के एफसीआई द्वारा सार्वजनिक वितरण प्रणाली, अन्त्योदय, अन्नपूर्णा योजनाओं के अन्तर्गत बांटा जा रहा अनाज बुरी तरह से सड़ा गला अनाज होता है। याचिकाकर्ता डॉ. किरीट सोमैय्या के साथ श्री मुख्तार अब्बास नकवी, सांसद श्री प्रकाश जावडेकर, सांसद और श्री जे.पी. नड्डा, भाजपा महासचिव ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अधिकारियों के साथ दिल्ली में मुलाकात की।

भाजपा का अनुरोध है कि -

1. एफसीआई के सभी गोदामों में पड़े अनाज का प्रयोगशाला में जांच कराने के लिए भारत सरकार के एफसीआई को निर्देश दिया जाए।
2. 180 लाख टन अनाज खुले में पड़ा है– आयोग का एक विशेष दल इन खुले गोदामों का दौरा करे।
3. एफसीआई को निर्देश दिए जाएं कि वह अच्छे अनाज का सड़े–गले अनाज के साथ न मिलाए।

भाजपा ने निम्नलिखित एफसीआई गोदामों का दौरा किया-

1. राजस्थान–उदयपुर, जयपुर, चितौडगढ़, सीकर।
2. उत्तर प्रदेश–कानपुर, लखनऊ, शाहजहांपुर।
3. हरियाणा– बानी, भगोला, करनाल, सिरसा, अम्बाला, कथैल, कलयात, इस्माइलाबाद।
4. पंजाब– फिरोजपुर।
5. महाराष्ट्र– मुम्बई।
6. आंध्रप्रदेश– नालागोण्डा।

भाजपा ने देखा कि-

1. एफसीआई के गोदामों में अनाज की स्थिति सभी जगह लगभग एक जैसी है।
2. गोदामों/अनाज की स्थिति अत्यंत भयानक है।
3. एफसीआई द्वारा निर्धारण के अनुसार उसने खुले/सीएपी गोदामों में अनाज भण्डार के लिए कोई समुचित व्यवस्था नहीं की है।
4. समझा जाता है कि लगभग 180 लाख टन अनाज खुले में पड़ा है।
5. अनाज की स्थिति न केवल सड़ी गली है बल्कि उसमें कीड़े लग गए हैं।
6. दुर्गंधपूर्ण बू आती है।
7. यह अनाज मानव–प्राणी के खाने लायक ही नहीं है, बल्कि पशु भी इसे खा नहीं सकते हैं।
8. सड़े गले अनाज को अच्छे किस्म की गेहूं के साथ मिलाया जा रहा है।
9. समझा जाता है कि इस अनाज का वितरण पीडीएस योजना के अन्तर्गत बिना किसी प्रयोगशाला जांच के किया जाता है।
10. विभिन्न राशन की दुकानों पर मिला अनाज कीड़ों और फफूंद से भरा था।

आयोग ने भाजपा को विश्वास दिलाया कि याचिकाकर्ता के नमूनों और अभ्यावेदन को आयोग की पूर्ण बैंच के सामने रखा जाएगा। ■

गांव, गरीब, किसान और आम आदमी विरोधी है यूपीए सरकार – राजनाथ सिंह

दिल्ली की वर्तमान यूपीए सरकार किसानों की समस्याओं के प्रति संवेदनहीन सरकार है। भारत में किसान की जितनी दुर्दशा यूपीए सरकार के कार्यकाल में हुई है, उतनी भारत के इतिहास में कभी नहीं हुई। मौजूदा सरकार ने अन्नदाता देश भारत के किसानों को आत्महत्या करने के लिए विवश कर दिया है। यह सरकार गांव, गरीब और किसान विरोधी है। इस सरकार के राज में बिचौलिए, दलाल, सड़े अनाज से बीयर बनाने वाले चंद लोग मालामाल हो रहे हैं। आम जनता महंगाई से त्रस्त है और किसान अपनी जमीन बेचने को विवश है। रासायनिक खेती से उर्वरा भूमि को ऊसर बनाया जा रहा है। सेज़ों के नाम पर किसानों की कृषि योग्य भूमि का षड्यंत्र के तहत अधिग्रहण किया जा रहा है।

किसान जनपंचायत में भाग लेते भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह, दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता एवं प्रदेश महामंत्री श्री प्रवेश वर्मा।

यह बातें भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 18 सितम्बर 2010 को दिल्ली प्रदेश भाजपा द्वारा जंतर मंतर पर आयोजित विशाल किसान जनपंचायत में की। उन्होंने कहा कि सीएसीपी जोकि किसानों के पैदावार का खर्च और कीमत का निर्धारण करती है वह मनमाने तरीके से काम कर रही है। उन्होंने कहा कि सीएसीपी को एक स्वायत्त संस्था बनाया जाए। उन्होंने कहा कि सीमांत और छोटे किसानों को एक प्रतिशत और उसके ऊपर दो प्रतिशत की दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाना चाहिए तथा इन किसान भाइयों से एक वर्ष तक वसूली नहीं की जानी चाहिए। यह पंचायत मंहगाई और जानबूझ कर अनाज गोदामों में सड़ने देने के विरूद्ध आयोजित की गई थी। इस अवसर पर सरकारी गोदामों में सड़ रहे अनाज की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। पंचायत में पूरी दिल्ली और आसपास के इलाकों से हज़ारों पगड़ीधारी किसानों ने एकत्र होकर भाजपा के यूपीए सरकार विरोधी इस अभियान को बल दिया। ज्ञात हो कि भाजपा ने 18 सितम्बर से 24 सितम्बर तक राष्ट्रीय स्तर पर किसानों की जनपंचायतें आयोजित करने का निर्णय किया है। इस निर्णय के परिपालन में सर्वप्रथम दिल्ली प्रदेश ने जंतर मंतर पर एकमंचीय व्यवस्था करके किसान पंचायत आयोजित की थी। पंचायत में शामिल हजारों किसानों जनविरोधी कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंकने का संकल्प किया।

भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री किरीट सोमैया ने बताया कि एक षड्यंत्र के तहत यूपीए सरकार सरकारी गोदामों में जानबूझ कर अनाज सड़ने दे रही है ताकि उसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को सस्ती दरों पर बेचकर अरबों रूपए का कमीशन बनाया जाए। इस सड़े अनाज से ये कम्पनियां मंहगी बीयर बनाती हैं और उसे बेचकर मालामाल होती हैं।

जनपंचायत में शामिल भाजपा कार्यकर्ताओं और किसानों को सम्बोधित करते हुए भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि प्रदेश भाजपा को गर्व है कि उसके राष्ट्रीय आह्वान पर सर्वप्रथम दिल्ली में किसान जनपंचायत आयोजित की गई है ताकि किसान विरोधी, जनविरोधी यूपीए सरकार की नींद टूटे। उन्होंने बताया कि दिल्ली की कांग्रेस सरकार भी आम आदमी, गांव, गरीब और किसान विरोधी है। श्री गुप्ता ने कहा कि दिल्ली की कांग्रेस सरकार घोषणा करने के बावजूद किसानों को उनकी भूमि का मुआवजा 75 लाख रूपए प्रति एकड़ की दर अदा नहीं कर रही है। गांव, गरीबों, किसानों, दलितों और आम आदमी के साथ दिल्ली सरकार का रवैया असंवेदनशील है। किसान पंचायत का संचालन दिल्ली प्रदेश किसान मोर्चा अध्यक्ष श्री राज कुमार बल्लन ने किया। ■

तृणमूल कांग्रेस पार्टी के सांसद हाजी नुरूल इस्लाम को गिरफ्तार करो : चंदन मित्रा

भाजपा संसदीय प्रतिनिधिमण्डल ने 9 सितम्बर 2010 को पश्चिम बंगाल में बसीरहाट और बारासात के देगंगा ब्लॉक तथा आस–पास के इलाकों का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमण्डल में श्री चंदन मित्रा, सांसद (राज्यसभा) और पश्चिम बंगाल के प्रभारी, तथा उदय सिंह, सांसद (लोक सभा) शामिल थे। उनके साथ में भाजपा पश्चिम बंगाल प्रदेशाध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा, पूर्व भाजपा पश्चिम बंगाल प्रदेशाध्यक्ष श्री तथागत राय एवं पार्टी की पश्चिम बंगाल इकाई के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी शामिल थे।

HKK जपा प्रतिनिधिमण्डल ने इस सप्ताह पहले हुए गम्भीर साम्प्रदायिक दंगों वाले क्षेत्रों का दौरा करते हुए देगंगा बाजार, कार्तिकपुर और अनेक आंतरिक गांवों के इलाकों में जाकर वहां की स्थिति की प्रत्यक्ष जानकारी हासिल प्राप्त करने की कोशिश की और हिन्दू समुदाय के उन आतंकित पीडितों को आश्वस्त करने की कोशिश भी की जो बसीरहाट तृणमूल कांग्रेस पार्टी के सांसद हाजी नुरूल इस्लाम की हिदायत पर काम कर रहे समाज–विरोधी तत्वों द्वारा बरपाई गई क्रूर हिंसा के शिकार हुए थे।

प्रतिनिधिमण्डल ने देखा कि शरारती तत्वों ने 250 से अधिक दूकानों और घरों को अपनी क्रूरता का शिकार बनाया अथवा उन्हें आग की भेंट चढ़ा दिया। पीड़ितों ने अपनी गाथा हृदय–विदारक रूप में बयान की और बाहर से लाए गए गुण्डों के हाथों उनकी हिंसा और अपमानित होने की पीड़ा व्यक्त की। पीड़ितों का यह भी कहना था कि पुलिस घटना के पहले दिन, अर्थात् सोमवार 6 सितम्बर 2010 को एक दम निष्क्रिय रही। हालांकि वहां राज्य की पुलिस, आरएएफ और सेना भी तैनात की गई थी फिर भी भय और अनिश्चितता का वातावरण फैला हुआ है। सेना ने केवल मुख्य राजमार्गों पर ही फ्लैग मार्च किया और उधर पुलिस का भी स्पष्ट कहना था कि उन्हें उपद्रवियों के खिलाफ ताकत इस्तेमाल न करने के आदेश थे। केवल बृहस्पतिवार को ही जब निशाने पर रहने वाले सम्प्रदाय पर निरंतर हिंसा होती रही, जिसकी आग आंतरिक गांवों तक फैल गई, तब कहीं जाकर आरएएफ ने कुछ कार्रवाई करना शुरू किया और स्थिति को थोड़ा बहुत नियंत्रित किया।

चत्तल गांव में दुर्गा पूजा पण्डाल खड़ा करने पर उसे मिटा डालने की जानबूझ कर की गई कोशिश के कारण दंगों की शुरूआत हुई, जबकि इस स्थान पर पिछले 40 वर्षों से यह सम्प्रदाय पूजा करता चला आ रहा है और वहां पर स्थायी मंदिर भी बना है। यह स्थान मुस्लिम कब्रिस्तान के पास का क्षेत्र है और हाल ही में भूमि के मालिकाना हक की बिनाह पर इस पारम्परिक स्थल पर दुर्गा पूजा रोकने का प्रयास किया गया।

हाजी नुरूल इस्लाम के गुण्डों की अहिंसा का लाभ उठाकर उपद्रवियों ने देगंगा बाजार की मस्जिद पर उच्च न्यायालय के आदेशों की अवहेलना करते हुए मस्जिद की छत पर माइक

भी लगा लिया था। स्थानीय हिन्दू सम्प्रदाय को इस बात पर गहरी आपत्ति और क्रोध भी है कि पुलिस ने माइक लगाने पर न हस्तक्षेप किया है, न ही इसे हटाने की कोशिश की जबकि पुलिस ने हिन्दू नेताओं से इसे हटा देने का वायदा किया था। भाजपा प्रतिनिधिमण्डल कार्तिकपुर के काली मंदिर भी गया जहां उसने देखा कि शरारती तत्वों ने इसे बुरी तरह से क्षत–विक्षत कर दिया था।

प्रतिनिधिमण्डल देगंगा थाने भी गया और वहां आईजी संजय मुखर्जी और एसपी राहुल श्रीवास्तव से बातचीत की। हमने पुलिस द्वारा प्रथमतः सामान्य स्थिति बहाल करने की सराहना करते हुए मांग की कि तुरंत ही शरारती तत्वों की गिरफ्तारी हो ताकि लोगों में विश्वास पैदा हो सके।

भाजपा ने मांग की है कि तृणमूल के सांसद हाजी उरूल इस्लाम को तुरंत गिरफ्तार किया जाए जिसने हर तरह से भीड़ को साम्प्रदायिक उन्माद फैलाने के लिए भड़काया और स्थानीय लोगों द्वारा दायर एफआईआर में उनका नाम है। पार्टी प्रतिनधिमण्डल ने लोगों को तुरंत मुआवजा देने की मांग की जिनकी दुकानों और घरों को लूटा गया और इतना जला दिया गया कि उनकी शक्ल भी पहचानी नहीं जाती है। भाजपा नेताओं ने सुरक्षा बलों द्वारा सक्रिय कार्रवाई की मांग की ताकि आतंकित स्थानीय लोग फिर से सुरक्षित महसूस कर सकें। उन्हें यह भी बताया गया बहुत से लोग, विशेष रूप से युवतियों को अपने इलाकों से भागना पड़ा क्योंकि उन्हें डर था कि उनके साथ अश्लील व्यवहार और इससे भी बुरा व्यवहार हो सकता है। तुरंत ही उन्हें अपने घरों को वापस लाने के लिए माहौल बनाया जाए।

पार्टी नेताओं को बहुत से पीड़ितों से यह सुनकर गहरी वेदना हुई कि उन्हें कुछ वर्ष पहले बांग्लादेश में से ही धार्मिक आतंक के कारण अपने देश को छोड़ कर आना पड़ा था। उन्होंने कहा कि अब उन्हें फिर से शरणार्थी बनना पड़ रहा है क्योंकि कुछ राजनीतिक नेता साम्प्रदायिक हिंसा फैला रहे हैं। इसके अलावा यह जान कर हैरानगी होती है कि किसी भी राजनैतिक पार्टी ने हजारों पीड़ितों की किसी तरह की इमदाद करने की कोशिश नहीं की है सरकार ने खामोश बने रहने की नीति अपना रखी है।

भाजपा ने पश्चिम बंगाल सरकार से तुरंत हस्तक्षेप करने की मांग की जिससे अपराधियों को पकड़ा जा सके, पीड़ितों को मुआवजा मिले, स्थानीय विवाद पर यथा स्थिति कायम रखी जाए और अशांत क्षेत्रों में सुरक्षा का भाव पैदा हो। ■

मध्य प्रदेश

राजनीति हमारे लिए लोक जीवन को संवारने का महान अवसर है : प्रभात झा

–संवाददाता द्वारा

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद श्री प्रभात झा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लिए राजनीति समाज में मानव मूल्यों की स्थापना और लोक जीवन को संवारने का अवसर है। हम समाज को जोड़े और दूसरों के दुःख दर्द को बांटकर उनके आंसू पोंछे। राजनीति को सार्थक करें।

श्री प्रभात झा ने 13 सितम्बर को अलीराजपुर और झाबुआ में मंडल स्तरीय कार्यकर्ताओं की बैठकों को संबोधित करते हुए कहा कि 25 सितम्बर को पं.दीनदयाल उपाध्याय जयंती पर हर मंडल में भारत माता का पूजन किया जाएगा और अन्त्योदय के हितग्राहियों से संपर्क किया जाएगा। आपने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि वे पं.दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव वाद की भावना को धरातल पर उतारें। समाज में विश्वास का संकट पैदा हो रहा है। राजनेताओं की विश्वसनीयता जनता की कसौटी पर है। इसे निश्चय ही सेतु बनाना होगा।

श्री प्रभात झा ने सौंडवा और छकतला मंडल की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि दुनिया में समाजवाद, पूंजीवाद, मार्क्सवाद की अवधारणा जब विफल हो चुकी है, पं.दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन में जनता की आशाएं केन्द्रित हैं। समाज के अंतिम व्यक्ति को समुन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ाना हमारा पुनीत कर्तव्य है। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश सह संगठन महामंत्री भगवतशरण माथुर ने कार्यकर्ताओं की बैठक और सम्मेलनों को कार्यकर्ताओं को तराशने की पाठशाला बताया और कहा कि भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। जनसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता ही संगठन की पूंजी है। ■

राम मन्दिर राष्ट्रीय मुद्दा है किसी राजनीतिक दल का एजेण्डा नहीं : राजनाथ सिंह

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि राम मन्दिर भाजपा के लिए राजनीतिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय मुद्दा है। अयोध्या में राम मन्दिर बनना चाहिए यह सभी की इच्छा है। राम मन्दिर देश की संस्कृति से जुड़ा विषय है। इस मुद्दे को किसी भी पार्टी को राजनीतिक रंग नहीं देना चाहिए बल्कि देश की संस्कृति का विषय है ऐसा मानकर आचरण करना चाहिए।

श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्मृति प्रन्यास संस्थान द्वारा प्रकाशित राजस्थान प्रदेश भाजपा की मुख पत्रिका ''मरू कमल दर्पण'' का लोकार्पण

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जयपुर भाजपा कार्यालय में श्री सुन्दर सिंह भण्डारी स्मृति प्रन्यास संस्थान की ओर से प्रकाशित प्रदेश भाजपा की मुख पत्रिका ''मरू कमल दर्पण'' के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे। श्री राजनाथ सिंह ने कहा राम मन्दिर के मुद्दे पर भाजपा की सोच साफ है। राम मन्दिर पार्टी का राजनीतिक और चुनावी मुद्दा नहीं है, राष्ट्रीय मुद्दा है। हम राम को नहीं भूल सकते हैं। वे हमारे सांस्कृतिक पुरूष है। लेकिन अल्लाह और ईसा मसीह से भी नफरत नहीं करते। राम के जन्म पर देश में ही नहीं विदेश में भी कोई विवाद नहीं है। दुनिया जानती है कि राम का जन्म अयोध्या में हुआ। ऐसे में राम मन्दिर अयोध्या में रामजन्म भूमि पर ही बनना चाहिए। पूर्व एनडीए सरकार में राम मन्दिर नहीं बनाया जा सका इसकी हमें पीड़ा है। लेकिन गठबन्धन के चलते सरकार को न्यूनतम साझा कार्यक्रम पर चलना मजबूरी थी।

स्व0 श्री सुन्दर सिंह भण्डारी के जीवन पर प्रकाशित ''मरू कमल दर्पण'' के प्रथम अंक का लोकार्पण करते हुए श्री सिंह ने कहा भण्डारी जी गूढ़ विषयों के ज्ञाता निष्काम कर्मयोगी थे। उन्होंने समाज में कद बड़ा करने के लिए पद की आवश्यकता को नकारा था। हम सब को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कार्यक्रम में भाजपा के राजस्थान के प्रभारी श्री कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि भण्डारी जी ने जिस समय संगठन का कार्य प्रारम्भ किया था उस समय समाज सेवा उनका मूल उद्देश्य व लक्ष्य था बाद में सत्ता आई वह तो फल है। सत्ता प्राप्त करना उद्देश्य कभीं नहीं रहा।

भाजपा की राष्ट्रीय महामंत्री व पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्री सुन्दर सिंह भण्डारी जहां एक कुशल संगठक थे वहीं एक अच्छे राजनेता भी साबित हुए।

उन्होंने अपनी सादगी से ही सारे समाज व कार्यकर्ताओं का मन जीत लिया। हमें आज उनके बताये मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। समारोह के प्रारम्भ में भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री अरूण चतुर्वेदी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

पत्रिका के संपादक शंकर अग्रवाल ने बताया कि इस पत्रिका के माध्यम से हम संगठन के विचार गांव–गांव तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

समारोह में भण्डारी जी के जीवन पर प्रकाश ड़ालने हेतु भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री ललित किशोर चतुर्वेदी एवं गुलाब चन्द कटारिया मुख्य वक्ता थे।

समारोह में भाजपा विधायक दल के उपनेता श्री घनश्याम तिवाड़ी, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष श्री रामदास अग्रवाल, श्री ओमप्रकाश माथुर एवं श्री भंवर लाल शर्मा सहित समस्त प्रदेश पदाधिकारी व बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।■

संघर्ष, सेवा और बलिदान– युवा मोर्चा की पहचान : अनुराग ठाकुर

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा का एक विशाल छात्र–युवा सम्मेलन मोती महल लॉन, लखनऊ में युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष हरीश द्विवेदी के नेतृत्व में उ.प्र. की महाभ्रष्ट मायावती की सरकार को उखाड़ फेंकने, लिंगदोह कमीशन के निर्देशों के अनुरूप छात्रसंघ की बहाली, रोजगार के अधिकार और कश्मीर के लिए जान की भी बाजी लगाने के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन को मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुराग ठाकुर ने सम्बोधित किया एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सूर्य प्रताप शाही, वरिष्ठ नेता एवं लखनऊ के सांसद लालजी टण्डन तथा पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रमापतिराम त्रिपाठी एवं युवा मोर्चा अध्यक्ष हरीश द्विवेदी ने सम्बोधित किया।

अनुराग ठाकुर ने भाजयुमो के इस सम्मेलन को सही मायने में युवाओं की आवाज उठाने के लिए बधाई देते हुए कहा कि युवाओं को अपनी चुनौतियों तथा राजनीति में अपनी भूमिका को समझना चाहिए। उत्तर प्रदेश हिन्दुस्तान की राजनीति में एक अहम भूमिका निभाता है। भारत की सबसे बड़ी ऊर्जा युवा शक्ति है। आज यूपीए सरकार देश को लूटने में और मायावती सरकार प्रदेश को लूटने में लगी हुई है। आप को यूपीए और मायावती सरकार के खिलाफ संघर्ष का संकल्प लेकर शहर से गांव तक जाकर छात्रों एवं युवाओं को एक सशक्त आंदोलन खड़ा करके 2012 में मायावती की बसपा सरकार को उखाड़ फेंकना है और भाजपा की सरकार बनानी है। उन्होंने जम्मू–कश्मीर समस्या पर युवाओं से बलिदान की हद तक जाकर संघर्ष करने का संकल्प कराया और नारा दिया कि संघर्ष, सेवा और बलिदान युवा मोर्चा की पहचान।

सूर्य प्रताप शाही ने युवा शक्ति का आह्वान करते हुए कहा कि परिवर्तन में हमेशा तरूणाई ही योगदान करती है। उन्होंने कहा कि कश्मीर आज ललकार रहा है। अलगाववाद, नक्सलवाद, आंतरिक सुरक्षा, बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा में भ्रष्टाचार, शैक्षणिक अराजकता, बी.एड. प्रवेश में धांधली आदि की चर्चा करते हुए कहा कि सबसे ज्यादा जवाबदेही और जिम्मेदारी युवा पीढ़ी की है। युवा आगे आकर संघर्ष करें हम साथ खड़े हैं। उन्होंने सरकार से छात्र–संघों की तत्काल बहाली की मांग की।

लालजी टण्डन ने अपने सम्बोधन में युवाओं को आत्म सम्मान का बोध कराते हुए कहा कि राष्ट्रीयता की भावना से ही परिवर्तन सम्भव है। आपको अपने हक की लड़ाई लड़नी चाहिए और युवा शक्ति परिवर्तन का वाहक बनेगी ऐसा मुझे विश्वास है।

डॉ. रमापतिराम त्रिपाठी ने इस अवसर पर कहा कि भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश की युवाशक्ति का नेतृत्व करेगा और लोकतंत्र की रक्षा तथा रोजगार के लिए युवाओं का संघर्ष सफल होगा। उन्होंने सपा, कांग्रेस और बसपा की चर्चा करते हुए कहा कि ये तीनों पार्टियां एक–एक परिवार की गुलाम हैं जबकि भाजपा के भविष्य आप ही हैं।

इसके पूर्व भाजयुमो के प्रदेश अध्यक्ष हरीश द्विवेदी ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि जिस प्रकार मायावती सरकार ने लोकतंत्र की प्राथमिक पाठशाला छात्रसंघों को प्रतिबंधित कर युवाओं की आवाज दबाने की कोशिश की है और युवाओं के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के बजाय मूर्तियों और स्मारकों पर पानी की तरह पैसा बहा रही है उससे प्रदेश का युवा आक्रोशित है और सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए बेताब है।

सम्मेलन में रोजगार एवं शिक्षा पर दो प्रस्ताव भी पास किये गये। रोजगार संबंधी प्रस्ताव भाजपा के क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने रखा तथा युवा मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राघव लखन पाल एवं राष्ट्रीय मंत्री राजेश चौधरी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। शिक्षा संबंधी प्रस्ताव शैलेन्द्र शर्मा 'अटल' ने रखा जिसका समर्थन युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक कटारिया ने किया। ■